ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

प्रबुद्ध जीवन

प्रेरणास्रोतः शांतिकुंज हरिद्वार

संस्थापनाः गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा (बिहार)

सम्प्रेषक- डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

वर्षः ०३ अंकः १०

'कर्त्तव्य ही पूजा

मनुष्य प्रायः ईश्वर को मंदिर, तीर्थ और कर्मकाण्ड में खोजता है, जबकि ईश्वर का वास्तविक निवास कर्तव्य में है। जो व्यक्ति अपने दायित्वों से पलायन करता है और केवल पूजा-पाठ में लिप्त रहता है, वह धर्म का बाह्य आडम्बर तो करता है, पर उसके मर्म को नहीं समझ पाता। कर्त्तव्य से विमुख होकर की गई साधना आत्म-संतोष तो दे सकती है, पर आत्म-उन्नति नहीं।

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी भूमिका में बँधा है- पुत्र, पिता, माता, विद्यार्थी, नागरिक। इन भूमिकाओं का ईमानदारी से निर्वाह करना ही सच्ची पूजा है। जिस दिन मनुष्य यह समझ लेता है कि उसका श्रम, उसकी निष्ठा और उसकी ईमानदारी ही ईश्वर को अर्पित पुष्प हैं, उसी दिन उसका जीवन पवित्र हो जाता है।

कर्त्तव्यपालन में कठिनाइयाँ अवश्य आती हैं, पर उन्हीं में मनुष्य की परीक्षा होती है। जो सुविधा देखकर चलता है, वह साधक नहीं हो सकता। कर्त्तव्य मार्ग पर चलने वाला व्यक्ति चाहे अलक्षित रहे, पर उसका जीवन समाज के लिए दीपक बनता है। ईश्वर उसी से प्रसन्न होता है जो बिना फल की इच्छा के अपना कर्त्तव्यकर्म करता है। वास्तव में कर्त्तव्य ही वह सेतु है जो मनुष्य को ईश्वर से जोड़ देता है।

हृदय से हृदय तक

हृदय में प्रवाहित होने वाली भक्ति जब सेवा और साहस का रूप धारण कर लेती है, तब वह इतिहास नहीं, शाश्वत प्रेरणा बन जाती है। इस माह में आने वाली हनुमान जयंती हमें स्मरण कराती है कि भक्तराज हनुमान का सम्पूर्ण जीवन इसी प्रेरणा का जीवंत साक्ष्य है। उनकी प्रत्येक लीला में शक्ति से अधिक विनय, पराक्रम से अधिक समर्पण और विजय से अधिक प्रभु-स्मरण दिखाई देता है। लंका-दहन की घटना भी ऐसी ही एक लीला है, जिसे सामान्यतः बाह्य पराक्रम के रूप में देखा जाता है, पर उसके भीतर गहन आध्यात्मिक संदेश निहित है।

माता सीता की खोज में लंका पहुँचे हनुमान जब रावण की सभा में खड़े थे, तब वे स्वयं को प्रभु का दूत मात्र मान रहे थे। उनमें न कोई दम्भ था, न अपनी अपार शक्ति का गर्व। रावण के अहंकार से भरे प्रश्नों और अपमान के उत्तर में हनुमान का मौन भी वाणी बन गया। उन्होंने केवल इतना कहा कि वे राम के दास हैं और राम की शरण में जाना ही रावण के कल्याण का मार्ग है। पर अहंकार सुनता कहाँ है? रावण ने दूत का अपमान करते हुए उनकी पूँछ में आग लगवाने का आदेश दिया।

यहीं से आरम्भ होती है लंका-दहन की वास्तविक कथा- जो केवल नगर जलाने की नहीं, बल्कि अहंकार के दहन की कथा है। हनुमान ने न तो प्रतिरोध किया, न क्रोध प्रकट किया। उनकी चेतना में केवल एक ही भाव था- 'यदि यह प्रभु की लीला है, तो इसमें भी लोक-कल्याण ही होगा। जैसे ही अग्नि प्रज्वलित हुई, हनुमान ने उसे अपनी भक्ति की मर्यादा में बाँध लिया। वह अग्नि उन्हें जला न सकी, क्योंकि राम-नाम की शीतलता उनके रोम-रोम में व्याप्त थी। लंका के महलों पर छलाँग लगाते हुए हनुमान ने किसी सामान्य जन का अहित नहीं किया। जहाँ माता सीता का स्मरण आया, वहाँ अग्नि स्वयं शांत हो गई। यह संकेत था कि भक्ति विनाश नहीं करती, वह विवेक के साथ कार्य करती है। लंका जली, पर हनुमान के हृदय में करुणा बनी रही। उनका उद्देश्य प्रतिशोध नहीं था, उद्देश्य था- रावण को चेताना, उसे यह बताना कि शक्ति का मद अंततः भस्म हो जाता है।

कथा कहती है कि लंका-दहन के पश्चात समुद्र तट पर बैठकर हनुमान स्वयं से प्रश्न करते हैं- 'क्या मैंने मर्यादा का उल्लंघन तो नहीं किया? यह प्रश्न ही उन्हें अन्य सभी वीरों से अलग करता है। जिनके पास अपार बल है, पर अहंकार नहीं; जिनकी विजय के बाद भी आत्म-परीक्षण शेष रहता है- वही सच्चे भक्त हैं। हनुमान जयंती हमें यही सिखाती है कि जीवन में शक्ति मिले तो उसे सेवा में लगाएँ, सफलता मिले तो उसे समर्पण से सँवारें और यदि प्रभु का कार्य मिले तो उसमें स्वयं को विलीन कर दें। भक्तराज हनुमान की यह चेतना आज भी हमें पुकारती है- अहंकार का दहन करो, करुणा को जगाओ और भक्ति को कर्म में उतारो। यही हनुमान की सच्ची आराधना है, यही हृदय तक पहुँचने वाली साधना है।

– डॉ. अरुण कुमार जायसवाल

देवोपम भारतवर्ष

एक ऐसा देश है इस भू पर जो शांति का मसीहा है जिसका, नाम भारतवर्ष है । 'भा' अर्थात् आभा, 'रत' अर्थात् लीन जो प्रकाश की खोज में लीन रहता है वह है हमारा भारतवर्ष । इसकी आत्मा में परमात्मा का वास है । सत्य का देश, प्रेम का देश, सदाचार का देश, न्याय का देश, समूची वसुधा को अपना परिवार माननेवाला देश, अहिंसा का देश, अनेकता में एकता का देश, सबको सम्मान देनेवाला देश, हिन्दु-मुस्लिम-सिख-ईसाई, जैन-बौद्ध, पारसी सभी के साथ मिल-जुलकर रहनेवाला देश, देवी-देवताओं को पलकों पर बिठानेवाला देश, समाधिस्थ शिव का देश, रणचंडी मां शक्ति का देश, सद्बुद्धिदात्री मां गायत्री का देश, गायत्री मंत्र का देश, प्रकृति की समस्त शक्तियों के पूजन का देश यह हमारा सुंदर, पावन, अनुपम भारतवर्ष है । इस भारतवर्ष की देवोपमता की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है । इस भारतवर्ष का इतिहास वैदिक इतिहास है जो स्वर्णमय था । बस उस इतिहास को पुनः दोहराने की आवश्यकता है । हमारा भारतवर्ष पुनः स्वर्ण की तरह चमक उठेगा और अंतर्मन से मनःशुद्धि की पुकार उठेगी और जब पुकार उठ गई तो भगवान उस मनःशुद्धि के लिए तत्पर क्यों नहीं होंगे ?

यह भारतवर्ष है भक्त, भगवती और भगवान की लीला का देश । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहां बार - बार भगवान ने किसी न किसी रूप में युग धर्म निभाया है । भारत भगवान की धरती है, यह उनसे पावन है । यहां ज्ञान की देवी सरस्वती की झँकार है, यहां पवित्रता की देवी लक्ष्मी की टँकार है, यहां रणचण्डी महाकाली की हुंकार है तो फिर कोई दानवी परम्परा कबतक भारत की बुद्धि पर हावी रहेगी । यहाँ तो होली के गुलाल, विजयादशमी के विजयोत्सव, दीवावली के दीपोत्सव की तैयारी होती है ।

आज जहां सारा विश्व युद्ध की आग में झोंका जा रहा है, चारों तरफ हाहाकार और चीत्कार है वहां भारत ही हिंसा के नग्न नर्तन पर अहिंसा का प्रेम दीप जलाकर शांति का संदेश दे सकता है क्योंकि भारत को अहिंसा का अभ्यास है, भारत में प्रेम की मिठास है, भारत में सत्य की प्यास है, भारत में न्याय की आस है, भारत में परमात्मा पास है, भारत में जीवात्मा को परमात्मा का साथ है । आज भारत के दिनकर की आभा से सारे विश्व को आलोकित करने के लिए छठी मैया से सर्व समृद्धि की प्रार्थना करनी होगी और जब वह दिनकर जगेगा तो समस्त विश्व को अपने घेरे में लेगा । यह भारत की आत्मा का सूरज है जिसके विषय में कहा जाता है कि आत्मा का सूरज एक बार जग गया तो यह अस्त नहीं होता । आत्म सूर्य की आभा के आगे सूरज, चांद, सितारे, अग्नि, विद्युत सभी की आभा फीकी है । ऐसे तेज से युक्त है हमारा भारतवर्ष और भारतवासी उन्हीं सूर्य देव की पूजा से इस महान ज्ञान को प्राप्त करते हैं । सूर्यदेव भारतवासियों के रोम - रोम में बसे हुए हैं । भारतवासी उन्हें सिर्फ आग का गोला नहीं मानते । वे तो उनके लिए व्रत - त्यौहार, उपवास सब करते हैं । फिर सूर्यदेव की कृपा भारतवर्ष पर क्यों नहीं होगी ।

यह भारतवर्ष है जहां आसुरी सम्पदा पर दैवी सम्पदा के विजय की प्रार्थनाएं की जाती हैं । जहां कहा जाता है - ''हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करें'' । हां, यहां दूसरों पर विजय प्राप्त करने की बात नहीं की जाती, यहां अपने ही मन पर विजय प्राप्त करने की बात कही जाती है और इसी मन पर लगाम कसने के लिए ईश्वर की उपासना की जाती है । यह उपासना ही है जो हमें सशक्त बनाती है । उपासना के बिना साधना कहां और साधना के बिना उपासना कहां, उपासना नहीं तो परमात्मा कहां और परमात्मा की कृपा के बिना आत्मा के सौन्दर्य का ज्ञान कहां ? तो आज पहले भारतवर्ष आत्मा के उस सौन्दर्य का मुग्ध भाव से पान करे और फिर शेष विश्व को उस सौन्दर्य का बोध कराए कि शांति युद्ध में नहीं, शांति अहिंसा में है । आनन्द मारने-काटने में नहीं, आनन्द किसी का दुःख-दर्द बाँटने में है । सुख किसी को पीड़ा पहुंचाने में नहीं अपितु उस पीडि.त के ऊपर मरहम लगाने में है, धर्म रक्तपात बहाने में नहीं अपितु गले मिलने में है । आज भारत को यह बात अपने आचरण से सिद्ध करना होगा । पहले भारत जगेगा फिर सारा विश्व जगेगा । भोर होगी, अवश्य भोर होगी पर पहले मन तो विभोर हो आत्मा-परमात्मा के गायक वेदों - उपनिषदों से क्योकि उनसे सजे मन की विभोरता में ही भारत और शेष विश्व की भोर छुपी है ।

– डॉ. लीना सिन्हा

सुधा बिन्दु

(प्रत्येक रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार कक्षा में बोले गए विषय के कुछ अंश और जिज्ञासा के अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर)

- भारत की प्रसिद्धि किस बात के लिए थी? ऐसा नहीं कि भारत आर्थिक दृष्टि से बहुत समृद्ध और संपन्न था। भारत की प्रतिष्ठा थी उसका परिवार, उसका समाज। परिवार व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था के कारण भारत प्रतिष्ठित था।
- परिवार और समाज, प्रकृति को और परमात्मा को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानता था, उसको महसूस करता था, आध्यात्मिक जीवन मूल्य थे। जब आध्यात्मिक जीवन मूल्य गए तो परिवार भी नहीं रहा और समाज भी नहीं रहा।
- आज आध्यात्मिक जीवन दृष्टि का अभाव है तो यह मान कर चलें कि समाज रसातल में चला जाएगा। गहराई में जाकर सोचें तो कारण गंभीर दिखता है कि धरती पर गहन तमोगुण की छाया है। चिंतन, चरित्र और व्यवहार सभी का गड़बड़ा गया है।
- अगर कोई आदमी आंधी में फंस जाए या बाढ़ में फंस जाए तो वह सामाजिक जीवन नहीं जी सकता है।
- परिवार का मतलब होता है प्रेम और विश्वास। आज यह दोनों रिश्तों से गायब हैं। आज परिवार के मूल्य ही चले गए हैं।
- भावनात्मक परिष्कार तो तब होगा जब भावना होगी।आज हर आदमी डरा हुआ है।
- दुनिया की जीवन शैली को बदलने के लिए प्रकृति को तमोगुण का आवरण हटाना पड़ेगा, तभी लोगों को होश आएगा ।
- आज तो मनुष्य जीवित प्रेत है, आदमी के शरीर में कुत्ता है ।आज का यही सत्य सार है, इमोशन है ही नहीं।
- आप अगर जीवन में अधिकतम आनंद प्राप्त करना चाहते हैं तो वह मिलता है संयम से ।क्योंकि संयम से इंद्रियों में ताजगी रहती है।
- जैसे वातावरण में अलग-अलग स्फीयर होते हैं। हवा की अलग, पानी की अलग लेयर होती है पर्यावरण में, वैसे ही विचारों का भी लेयर होता है। लेकिन जब विचार दुरुस्त नहीं है तो धरती पर आदमी सुखी नहीं रह सकता।
- प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है। माँ बनना तो एक जैविक घटना है, पर मातृत्व का होना एक दैवी घटना है।
- पश्चिम का एक दार्शनिक है-" Ninjiski" उसने कहा कि नारी का प्रेम कब पूर्ण होता है ? जब उसको अपने पति में अपनी संतान दिखने लगती है, वह पति का पुत्रवत ख्याल रखती है। यह बात सबसे पहले भारत में कही गई फिर इस बात को विदेशों में भी लोगों ने कहा।
- प्रेम जब पूर्ण होता है जब वह पत्नी की जगह माता बन जाती है । पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया। यह संतानवत प्रेम बहुत विरल है, बहुत मुश्किल है।

घर परिवार में जो आपस में प्रेम, अपनापन, बिना झिझक के, डर के अपनी बात एक-दूसरे से कह सकते हैं, वह संस्कृति अब विलीन हो रही है। उसे फिर से विकसित करने की आवश्यकता है।

परिवार में, समाज में सुव्यवस्था नियमों से नहीं आती है प्रेम और ईमानदारी से आती है ।

नारी के जीवन का अधिकांश भाग रहस्यमय होता है जो तल पर है उससे अधिक गहरे में होता है। स्त्री का व्यक्तित्व रहस्यमयता को लिए होता है, उसी तरह पुरुष का भाग्य भी रहस्यमय होता है। इसे देवगण भी नहीं जान पाए तो मनुष्य कैसे जान पाएगा?

जीवात्मा को संतुष्टि तब होती है जब वह अपने जन्म का उद्देश्य पूरा करता है।

त्रिया प्रकृति का स्वरूप है, वह अगम्य और अगोचर है। उसे पूरी तरह कभी जाना नहीं जा सकता । इसलिए प्रकृति को भी त्रिया कहा जाता है, माया कहा जाता है।

भारत भूमि की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहां परमात्मा को माँ के रूप में माना जाता है ।बाकी किसी भी देश में परमात्मा की माँ के रूप में उपासना कहीं नहीं है।

हमारा सुख-दुख, हमारी पीड़ा-परेशानी, हमारे जीवन की व्यवस्था-प्रताड़ना कौन सुन सकता है? परमात्मा तो निष्क्रिय है, निर्विशेष, निराकार है लेकिन प्रकृति तो सक्रिय है। हमें जो सहायता, हमें जो मदद, हमें जो वात्सल्य चाहिए वह तो प्रकृति ही देती है न। परमात्मा का क्रियाशील रूप ही तो प्रकृति है। इसलिए हमें परमेश्वर की उपासना मां के रूप में करना ज्यादा सहज लगता है।

प्रकृति ने नारी का व्यक्तित्व रखा है मातृत्व प्रधान । नारी स्वाभाविक रूप से माँ है। नारी के अंदर माँ होना एक ऐसी खासियत है जो उसे देवत्व प्रदान करता है, देवी बनाता है।

पुरुष का व्यक्तित्व बहिर्मुखी ज्यादा होता है, नारी का व्यक्तित्व अंतर्मुखी ज्यादा होता है। पुरुष पुरुषार्थ प्रधान है और नारी भाव प्रधान है।

अवगुण की बात करें तो पुरुषोचित अवगुण अहम है और नारियोचित अवगुण ईर्ष्या है। अज्ञान के कारण संवेदना की ऊर्जा ईर्ष्या में बदल जाती है और अज्ञान के कारण ही पुरुषार्थ की ऊर्जा अहंकार में बदल जाती है। ज्ञान के कारण वह ऊर्जा संवेदन भाव बना रहेगा और पुरुषार्थ में भी विनम्र भाव बना रहेगा।

दुनिया की जो सुगंध है, सुवास है, खुशबू है, रंग है वह नारी से है। सबसे बड़ी बात है नारी का सान्निध्य, नारी का संपर्क पुरुष को सुकून देता है, शांति देता है, तृप्ति देता है।

प्रत्येक आदमी जो पुरुष होता है, जो सुकून, जो शांति, जो आनंद उसे अपनी माँ के पास मिलता है, वह पिता के पास नहीं मिलता। यह सत्य है।

प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है।

स्त्री अपने सौंदर्य के कारण पूजनीय नहीं है, सौंदर्य के कारण वह प्रसंशनीय हो सकती है, लेकिन वह अपने मातृत्व के कारण पूजनीय होती है।

स्त्री पारस की तरह होती है, वह प्रेम नहीं करती प्रेमी में बसती है। जिस रिश्ते को छूती है उसे प्रेम से भर देती है।

स्त्री होना सौभाग्य है या दुर्भाग्य वह व्यवस्थाओं का विषय है, लेकिन स्त्री का अस्तित्व में होना उत्सव का विषय है।

स्त्री में प्रेम के संबंध में दो गुण होते हैं- पहला- वह सामने वाले तक अपने प्रेम को आसानी से संप्रेषित कर देती है, वह मौन संप्रेषण होता है। दूसरा- प्रेम के लिए उसके अंदर प्रतीक्षा का धैर्य बहुत होता है।

स्त्री को प्रेम करना आता है, जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी, यह बहुत अद्भुत है।

- पुरुष प्रेम का सतही रूप अनुभव करता है। पुरुष के प्रेम में आक्रामकता है, वह छीनना चाहता है, पा लेना चाहता है, नजदीकी चाहता है ।जिसको प्रेम करता है उसे अपने पास रखना चाहता है यानि हथियाना चाहता है। एक प्रकार की यह आक्रामकता है। स्त्री का प्रेम आक्रामक नहीं है, वह ग्रहणशील है।
- स्त्री परिवार की धुरी है, हर रिश्ते को संभाल कर रखती है।
- पुरुष की मानसिकता को स्त्री अपनाने लगी इसलिए आज रिश्ते तार-तार होने लग गए हैं और पारिवारिक जीवन गड़बड़ाने लग गया है।
- भारत में वधू को गृह स्वामिनी, गृह लक्ष्मी कहा जाता है। स्त्री घर की, जीवन की चेतना है, चैतन्यता है, चेतना शक्ति है, आधार है।
- भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में सदा से प्रतियोगिता और प्रतिस्पर्धा नहीं है,बल्कि सहयोग और सहकार है।जिस परिवार में हमेशा सहयोग और सहकार होता है उस परिवार को धरती का स्वर्ग कहा जाता है।
- नारी जीवन का नित्य उत्सव है, क्योंकि उत्सव बिना प्रेम के संपन्न नहीं हो सकता, बिना प्रेम के प्रसन्नता टिक नहीं सकती।
- अपने भारत में संन्यासी होने का मतलब नारी से नफरत करना नहीं है, नारी के प्रति मातृ भाव रखना है। प्रेयसी और प्रेमिका ये जो नारी के गुण हैं, यह केवल गृहस्थ के लिए है और अंत में उसकी पूर्णता मातृत्व में है। इसलिए कोई भी हों, संत हों, साधु हों उन सभी के लिए नारी जननी है, माता है। इसलिए माँ का हम सम्मान करते हैं, उनके प्रति श्रद्धा रखते हैं।
- मिथिला अयोध्या और लंका तीन स्तर है समाज का। लंका में स्त्री वस्तु है, अयोध्या में नारी लक्ष्मी है और मिथिला में सरस्वती है।
- मिथिला में गार्गी याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ कर सकती है, यह मिथिला का वैभव है। मंडन मिश्र की पत्नी भारती आदि गुरु शंकराचार्य से शास्त्रार्थ कर सकती है और शंकराचार्य उसके मान के साथ शास्त्रार्थ करते हैं। अयोध्या में वह लक्ष्मी है, नित्य उत्सव रचाती है, घर में प्रेम बरसाती है। कौशल्या हो सकती है, सीता हो सकती है । लंका में तो मंदोदरी भी सम्मानित नहीं है।
- किसी-किसी धर्म में स्त्री को वस्तु से ज्यादा माना ही नहीं गया। सामान्य भारतीय समाज नारी को लक्ष्मी मानता है, सरस्वती मानता है। वह इसलिए कि उसकी जो सात्विकता है, उसकी विद्या, उसका प्रेम, उसका ज्ञान जन सामान्य को इसका एहसास कराता है।
- हमारे जीवन मूल्यों में एक और विधान है वह कर्म के प्रायश्चित करने का विधान । सच्चे मन से, सही ढंग से, सही तरीके से कर्म का प्रायश्चित करिए।
- नारी का जो नारी स्वरूप है यानि नारी में जो गुण है- कीर्ति, श्री, वाक्, स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा। जब यह स्वरूप उभर कर आता है, तब वह समाज को सौंदर्य प्रदान कर पाती है।

जिज्ञासा

प्रश्न- मेरे मन में एक हल्का फुल्का किंतु मज़ाकिया किंतु जिज्ञासा पूर्ण प्रश्न है, इस व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा की जो तस्वीरें समाचार पत्र में प्रकाशित होती हैं, उसमें प्रायः लड़कियों की तस्वीर ही दिखाई देती है, उसमें हम बालकों की तस्वीरें बहुत कम रहती है इसका प्रमाण कुछ तस्वीर इस जिज्ञासा प्रश्न में नीचे संकलित कर दिया है। हम बालक लोग क्या कैमरे से अदृश्य हो जाते हैं या हमारी पंक्ति तक पहुंचते- पहुंचते कैमरा की बैटरी समाप्त हो जाती है? गुरुदेव कृपया इस रहस्य पर से पर्दा उठाने की कृपा करें, ताकि अगली बार अखबार खुले तो हमारे भी दर्शन हो जायें और परिवार वाले को प्रमाण मिल सके कि हम भी कक्षा में उपस्थित रहते हैं।

उत्तर- ये तो भाग्य की बात है, तुमको अपने फोटो का दर्शन अखबार में नहीं होता है। लड़कियों की तरह तुम्हे भी अपना सौभाग्य लेकर पैदा होना चाहिए था। हालांकि यह एक संयोग है, हो सकता है आगे फोटो लेने वाले हैं आपका भी फोटो ले लें। हालांकि ये जिज्ञासा नहीं मसखरी है, लेकिन एक चीज़ महत्वपूर्ण है जो, आपके माता-पिता जी को इस बात का प्रमाण मिल जाये कि क्या आप इस पर्सनैलिटी डेवलपमेंट के क्लास में उपस्थित हैं। ये प्रमाण मिलेगा आपके व्यवहार से, आपके जीवन से, आपके जीवन मूल्यों से प्रमाण । तस्वीर से प्रमाण नहीं मिलेगा, हो सकता है तस्वीर आपकी आ जाए अखबार में। प्रमाण भी देगा कि आप सबेरे-सूर्योदय से पहले उठते हैं, उठकर उषापान करते हैं, जल पीते हैं, माता-पिता का चरण स्पर्श करते हैं, अभिवादन करते हैं, आपके भोजन की अभिरुचियां क्या बदली हैं, आपकी जीवनशैली बदली है, जीवन में आपने समय का सुनियोजन करना शुरू कर दिया है, बस। आपके पढ़ने-लिखने का तरीका बदला है क्या, जो संबंध है उसके प्रति आपकी सोच बदली है क्या ? ये आपके प्रमाण हैं कि आप कक्षा में उपस्थित हैं। जो यहाँ सत्संग आपको मिलता है, प्राचीन से प्राचीन जीवन मूल्य और आधुनिकतम खोज के बारे में जो यहाँ बताया जाता है, जीवन की जिन समस्याओं के बारे में बताया जाता है, आपके दृष्टिकोण को सही करने का प्रयास किया जाता है, उसको आपने गंभीरता से लिया क्या? आपकी अभिरुचि विकसित हो पाई क्या, पढ़ने में प्रबल रुचि विकसित हो पाई क्या, यही वह समय है जब आप अपने को निखार सकते है, अपने व्यक्तित्व का परिष्कार कर सकते हैं, अपने जीवन का विकास कर सकते हैं। लेकिन जब आदमी बीमार है तो उसको चाट की याद आती है, और अगर आदमी स्वस्थ है तो उसे रोटी की याद आती है। वैसे ही जीवन शैली है, अगर स्वस्थ है,सतोगुणी है कोई तो उसमें सात्विकता आती है। अगर बीमार है, राजसिक और तामसिक है तो जीवन शैली भी हो जाती है ही एंड सी वाली। अखबार में नाम की इच्छा, फोटो की इच्छा आपको कहाँ ले जा कर स्थापित करेगा, ज़रा विचार करिए, आपलोग अदृश्य नहीं होते आपके अच्छे विचार अदृश्य हो जाएंगे, कैमरे की बैटरी तो डाउन नहीं होती, आपके जीवन की बैटरी जरूर डाउन हो जाएगी। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार के दिन आना जस्ट लाइक अपने जीवन की बैटरी को चार्ज करना है, अखबार में फोटो आना नहीं है।

प्रश्न- मेरा प्रश्न यह है कि मैं हमेशा से राशिफल के बारे में सुनता आ रहा हूँ, क्या राशिफल सच में होता है? अगर होता है तो यह नाम के शुरू के अक्षर पर ही क्यों निर्भर करता है? कृपया बताइए।

उत्तर- पहली बात तो यह है कि जन्म कुंडली के अनुसार जो राशि होती है, उस अनुसार नाम का अक्षर तय होता है। नाम के अक्षर के अनुसार राशि तय नहीं होता है। राशि के अनुसार नाम का अक्षर तय होता है। तो यह देखना है कि क्या आपका नाम राशि के अक्षर के अनुरूप है? राशि का मतलब होता है, ढेर, बंच, एक भाग। इतनी राशि हम देनेवाले हैं, इतना भाग हम देने वाले है। जो भी भविष्यवाणी राशि वाले लोगों के लिए होती है, वह मोटा-मोटी बातें होती हैं। यह जरूरी नहीं कि व्यक्तिगत रूप से आप पर लागू हो। कुछ बातें लागू नहीं भी हो सकती हैं। इसलिए सामूहिक राशिफल हमेशा एक्यूरेट नहीं होता है। जो सामूहिक राशिफल है वह जनरलाइज है, इसलिए वह व्यक्तिगत रूप से एक्यूरेट नहीं होती है। आज का राशिफल अखबार में होता है, ढेर लोगों के लिए फल होता है। कुछ फल आपको सूट करेगा,कुछ फल सूट नहीं करेगा। महत्वपूर्ण बात यहाँ यह है कि जिस क्षण में आपका जन्म हो रहा था, उस समय वातावरण में कौन से अक्षर का कंपन विद्यमान था, यह पंचांग से पता चल जाता है, उस आधार पर राशि के नाम का अक्षर तय होता है। अक्षर यानि जिसका क्षरण नहीं होता है, नष्ट नहीं होता है, जब आपको उस नाम से पुकारा जाएगा तो अंतरिक्ष से वो उर्जा सहज ही आपके अंदर प्रवेश करेगी और आपको पोषण और संरक्षण देगी। हमारी लिपि देवनागरी लिपि है, अन्य लिपि मानव निर्मित लिपि है। आप प को ह या ल को ट नहीं कह सकते। प आकार की कांच नली मोड़ लीजिए, उससे विंड पास कराईये, दूसरे छोर से हवा निकलेगी तो प की ही ध्वनि सुनाई पड़ेगी। ल आकार की मुड़ी हुई कांच नली से ल ही निकलेगा, ह नहीं निकलेगा या कोई और ध्वनि नहीं सुनाई देगी। तो ये प्राकृतिक और वैज्ञानिक प्रक्रिया है। किसी का नाम किस अक्षर पर रखा जाए, इस तरीके से पंचांग की सहायता लेकर रखना चाहिए, इसका जीवन में इस प्रकार लाभ उठाया जाना चाहिए।

प्रश्न- आज से 40-50 साल पहले मेरे अपने चाचा जी का बाल्यावस्था में देहांत हो गया महाशिवरात्रि के दिन, तो क्या हम उस महाशिवरात्रि के दिन महादेव की पूजा-अर्चना-व्रत कर सकते हैं?

उत्तर- अपने यहाँ यह मान्यता है कि अगर किसी पर्व-त्योहार के दिन किसी का देहांत हो जाए तो जब तक उस दिन कुल-खानदान में किसी का जन्म नहीं होगा, तब तक वह पर्व या त्योहार नहीं मनाया जाता। मृत्यु के समय सूतक लगता है तो शोक दिवस की अवधि में खुशी का काम नहीं कर सकते, उत्सव नहीं मना सकते। लेकिन पूजा-पाठ-व्रत- उपवास-हवन-यज्ञ तो किया ही जा सकता है। क्योंकि वह उल्लास का, उत्सव का कार्य नहीं है, वो तो तप का कार्य है। पूरी-पकवान मत खाइए, खुशियां मत मनाइये, गाना- गीत मत गाइये, पर पूजा जरूर करिए, उनसे चाचा जी का भी कल्याण होगा। अपने यहाँ तो यह भी एक भ्रांति है कि 1 साल तक मंदिर न जाएं, कोई भी पर्व-त्योहार न मनायें, घर में साँझ-बत्ती-दीया भी न दिखाएं। हम पूछते हैं कि मॉल जाएं, सिनेमा हॉल जाएं, टीवी देखें, पकवान खाएं लेकिन पूजा-पाठ करने मंदिर न जाएं, पर्व-त्योहार न मनायें, घर में बत्ती भी न दिखाएं, भूत बंगला बना दें घर को, ये किस शास्त्र में लिखा है? सभी पर्व-त्योहार मनाना चाहिए । ठीक है, 1 साल तक दीपावली में पटाखा मत छोड़िए, लेकिन पूजन करिए, होली में रंग- अबीर मत खेलिये, लेकिन पूजन करिए, ये कभी कहीं मनाही नहीं है। सिर्फ एक वर्ष तक मांगलिक कार्य की मनाही है, वार्षिक श्राद्ध के बाद मांगलिक कार्य भी किया जा सकता है। लेकिन प्रतिवर्ष आनेवाले पर्व- त्यौहार को जरूर तपस्या पूर्वक मनाना चाहिए, भले ही किसी की मृत्यु हो गई हो तब भी। इसका एक रास्ता अपने शास्त्रों में भी बताया गया है, अगर पर्व-त्योहार को फिर से शुरू करना चाहते हैं, तो किसी तीर्थ में जा करके, एक बार उस त्यौहार को मना लें, फिर सामान्य क्रम में घर में भी मनाया जा सकता है। एक और बात, परिवार में

किसी के जन्म के समय भी सूतक लगता है, फिर 6 दिन या 12 दिन के बाद हम छठी मनाते हैं, उत्सव मनाते हैं, क्योंकि वह आनंद का उत्सव है। सूतक का मूल यह है 6 दिन या 12 दिन या मृत्यु के समय आप दैनिक-पूजन को छोड़ करके, उस बच्चे की देखभाल की भलीभाँति जिम्मेदारी निभाएं, फुल अटेंशन दें या फिर जो शोक में हैं उनको संभालें और संस्कार तर्पण पिंडदान की भली-भाँति व्यवस्था बनाएं। सूतक का सिर्फ इतना ही तात्पर्य है। अगर इसके बाद भी आपको समय मिलता है, तो आप पूजा-पाठ कर सकते हैं। शास्त्रों के अनुसार यह दैनिक पूजा नहीं करने की छूट है, न कि पूजा करना निषेध है।

प्रश्न- मैं यहाँ करीब दो वर्षों से आ रहा हूँ, आपके द्वारा चर्चा किया गया व्यक्तित्व परिष्कार सत्र अच्छा लगता है। मेरा प्रश्न यह है कि प्रत्येक रविवार व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा आपके द्वारा आयोजित की जाती है तो इसमें गान ज्ञान ध्यान सब कुछ बहुत ही अच्छे प्रकार से कराया जाता है परंतु जिस रविवार आप नहीं रहते इस कक्षा के आयोजन में थोड़ी कमी रह जाती है। कृपया स्पष्ट करने का कष्ट करें।

उत्तर- प्रायः अंतिम रविवार हम पटना रहते हैं, या फिर जब बाहर रहते हैं तो यह कक्षा हम नहीं ले पाते हैं, जैसे अभी हो सकता है अप्रैल के फर्स्ट वीक में यूएस जाएंगे तो कक्षा में नहीं रहेंगे। हमें तो लगता था कि लगातार एक ही आदमी को सुनते-सुनते आप लोग बोर हो जाएंगे तो एक चेंज होना आपको ज्यादा अच्छा लगेगा। लेकिन अगर आपको आदत हो गई है तो आदत बदलनी चाहिए, वैसे भी जो भी यहाँ बोलते हैं, पूज्य गुरुदेव की बात को बोलते हैं, इसलिए उसे भी ध्यान से सुनें और अपने जीवन में उसे आत्मसात करें। वैसे भी सिर्फ हम बोलेंगे तो फिर नए लोगों को कब अवसर मिलेगा? हमेशा हम तो नहीं रहेंगे, इसलिए सबको सुनिए, कहने का ढंग अलग हो सकता है, पर जो बातें इस जगह से कही जाती हैं वे जीवन को उत्कृष्ट करने की ही होती हैं । आप लगातार दो वर्षों से आ रहे हैं, हम तो चाहेंगे जो आपने इतने दिनों में सीखा, उसे आने वाले बरसों में आप भी इस जगह से अन्य बच्चों को बताएं। अच्छा वक्ता बनने के लिए अच्छा श्रोता बनना पड़ता है। नित्य स्वाध्याय करना पड़ता है, स्वाध्याय के साथ अपने चिंतन को प्रगाढ़ करना पड़ता है। देखिये व्यक्तित्व गढ़ना कठिन है , पर वक्ता होना बहुत कठिन नहीं है। लेकिन चलिए हम आपको अच्छे लगते हैं इसके लिए आपको धन्यवाद।

प्रश्न- मेरा ये प्रश्न है कि आज देख रहे हैं एक देश दूसरे देश पर हमला कर देता है और अभी अमेरिका, ईरान पर हमला कर उसे बर्बाद करने पर तुला है, तो बड़ा देश एक छोटे से देश पर इतना कर रहा है, तो क्या भगवान उस बड़े देश को सद्बुद्धि नहीं दे सकते? कृपया बताने का कष्ट करें।

उत्तर- रहीम कवि कहते हैं सबै सहायक सबल को, कोऊ न निबल सहाय। पवन बढावत आग को दीपे दी बुझाई। सबल के सभी सहयोगी होते हैं, लेकिन निर्बल के कोई सहयोगी नहीं होते। जैसे आग लगी हुई है, हवा चलती है तो आग और बढ़ जाती है और उसी हवा में दीया जल रहा हो तो वह बुझ जाता है। तेज हवा चलेगी तो दीया बुझ जायेगा न। संसार हमेशा बुद्धि से, शक्ति से, सामर्थ्य से चलता है। सांसारिक जीवन जीने के लिए आपको मजबूत कर्म करना पड़ेगा। संसार के अपने नियम हैं, जिसमें बौद्धिक कुशलता के साथ व्यवहारिक कुशलता की भी जरूरत है। संसार में जीने और जीतने के लिए शक्ति और सामर्थ्य की जरूरत पड़ेगी। आप सचमुच संसार को सुखी करना चाहते हैं, संसार सुखी होना चाहता है या नहीं होना चाहता है, उस बात को छोड़िये, तो आपके अंदर कुछ दैवी गुण चाहिए, सहृदयता

चाहिए, संवेदना चाहिये, गुण ग्राहय्ता चाहिए। राम अच्छे राजा थे उनसे कोई तुलना नहीं है, दूसरा राजा ऐसा हो नहीं सकता जो राम के बराबर हो जाए। भोजराज ने भी अपनी रामायण लिखवाना शुरू किया था। तो काक मुनि यानि कौआ आ गया और उसने कहा कहाँ राजा राम और कहां मूर्ख तू? कौआ ने पूरा दृश्य दिखाया। ऐसा महात्मा राम के अलावा दूसरा अगर कोई धरती पर अच्छा राजा दिखाई देता है, तो राजा विक्रमादित्य हैं। जो अखंड भारत पर राज्य किया, जिसकी सीमा चीन, ईरान, रोम तक पहुँच गई हो। विक्रमादित्य के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने भी पांच शरीर सिद्ध कर लिए थे। यानि जब तक संसार में भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय नहीं होता, आध्यात्मिक जीवन दृष्टि के साथ भौतिक कुशलतायें विकसित नहीं होती, तब तक संसार इसी तरह युद्ध के नरक में झुलसता रहेगा। आध्यात्मिक जीवन दृष्टि के अनुसार बुद्धि, शक्ति और सामर्थ्य विकसित नहीं होती, तब तक ईरान और अमेरिका आदि की घटनाएं घटती रहेंगी। इतिहास में ऐसा कई बार हो चुका है और आगे भी होता रहेगा। अब रही बात भगवान की, वे अमेरिका को सद्बुद्धि दें। तो भगवान के बारे में समझने की कोशिश करें, वह हम सभी के कर्मों का नित्य साक्षी है। भगवान कभी कुछ नहीं करता, सद्बुद्धि आपको खुद विकसित करनी होगी। गीता में भगवान कहते हैं न कि जो मुझे जिस भाव से भजता है, मैं उसको उसी भाव से मिलता हूँ। क्या धरती के सभी मनुष्य भगवान को उस भाव से भजते हैं, कि मुझे सद्बुद्धि मिल जाये या धरती पर सुख-शांति-समृद्धि आ जाए? सभी तो अपने लिए भजते हैं और भगवान कभी-कभी उनकी मनोकामना पूर्ण कर देता है। आपका प्रश्न होगा कि क्या समूह के लिए दायित्व नहीं है भगवान का? समूह के लिए व्यवस्था है कर्मफल विधान, जिनकी भगवान के प्रति श्रद्धा है, समर्पण है , उनके लिए सुरक्षा है। समर्पण है, वह व्यवस्था व्यक्ति के लिए है। श्रद्धा के अनुसार प्रत्युत्तर मिलता है। इतिहास के पन्ने पलटकर देखें, तो अंग्रेजों के राज्य में कभी सूरज डूबता नहीं था, आज अंग्रेज का राज्य उत्तर प्रदेश से भी छोटा हो गया है। वहाँ भी अंग्रेज की जगह दूसरे धर्म के मेयर बन रहे हैं। ये अंग्रेजों का कर्म था जो इंग्लैंड के साम्राज्य का पतन हो गया, और लगता है कि अमेरिका भी अपने साम्राज्य के पतन की ओर गतिशील है। सोवियत रूस ने भी बहुत ज्यादा पाबंदी लगाई तो सोवियत संघ बिखर गया और रूस जैसे अन्य कई देश बन गए। भगवान यानि काल कर्म के परिपाक का इंतजार करता है।।हमारे, आपके कहने के अनुसार नहीं करेगा, यह एक स्वचालित व्यवस्था है। पानी उबलेगा कब? जब 100 डिग्री सेंटिग्रेड पर पहुँच जायेगा तब ,100 डिग्री उसका ब्वॉयलिंग प्वाइंट है, 100 डिग्री सेंटिग्रेड का इंतजार कीजिए प्रकृति संज्ञान तो लेगी ही न। जब ब्वॉयलिंग प्वाइंट, मेल्टिंग प्वाइंट आ जायेगा तो हो जाएगा। जब तक नहीं आएगा तब तक बड़ा देश, छोटे देश को खाता रहेगा। इंग्लैंड का जब ब्वॉयलिंग प्वाइंट आया तो सिकुड़ गया। तत्काल के लिए व्यक्ति के रूप में आपको भगवान की आराधना करनी पड़ेगी तो जो यह सामूहिक व्यवस्था संचालित हो रही है वह काम नहीं करेगी, इसलिए हम सभी को जो मानवता प्रेमी हैं,भगवान से ही आराधना करनी पड़ेगी। तभी दुनिया की जो यह भयावह स्थिति है उसमें कमी आएगी या खत्म हो जाएगी। या तो इकाई के रूप में भगवान की आराधना करें या फिर सामूहिक रूप से कर्मफल विधान की प्रतीक्षा करें। वैसे भी जब-जब धरती पर असंतुलन बढ़ता है तो भगवान अवतार लेते ही हैं।

प्रश्न- मेरा प्रश्न यह है कि क्या बिना शाकाहारी हुए गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं? कृपया कर मार्गदर्शन करें।

उत्तर- सिर्फ गायत्री मंत्र का उच्चारण कर रहा है तो बिना शाकाहारी हुए कर सकते हैं, अगर गायत्री मंत्र के जप के परिणाम को प्राप्त करना है तो आपको शाकाहारी होना पड़ेगा। वैसे एक माला, दो माला आप जप कर लेते हैं,बिना शाकाहारी हुए, तो कोई हानि नहीं है। ऐसा इसलिए है कि शाकाहारी होने का मतलब यह नहीं कि हम सिर्फ फल-सब्जी खा रहे हैं, मिर्च-मसाले भी कम रहे, मन में हिंसा की भावना न हो तो वास्तविक शाकाहारी हैं। लोग मिर्च मसाला ज्यादा खा रहे, तो गायत्री मंत्र के जप का अपेक्षित परिणाम उनको नहीं मिलता है। गायत्री मंत्र, सतोगुण का मंत्र, सूर्य के प्रकाश का मंत्र है, किसी देवी-देवता का मंत्र नहीं है, परमात्म चेतना का मंत्र है, परात्पर शक्ति का मंत्र है। मंत्र के लिए कहा जाता है कि देवता बनकर ही देवता की पूजा होती है, देवत्व को धारण करने के लिए हमें भी वैसा आचरण करना चाहिए। गायत्री की प्रकृति हंसवाहिनी है, नीर-क्षीर- विवेक की देवी हैं, उनकी प्रकृति के अनुसार, उनके स्वभाव के अनुसार हमें अपना स्वभाव भी विकसित करना होगा, अपनी प्रकृति विकसित करनी होगी तभी यथोचित लाभ मिल पायेगा। गायत्री मंत्र की प्रकृति सात्विक है, इसलिए सात्विक भोजन शैली ही नहीं, जीवन शैली भी विकसित करनी होगी। लेकिन जो तमोगुणी मंत्र है शावर-डाबर मंत्र, उसमें मांस-मदिरा सभी चलता है। मंत्र की प्रकृति जैसी है, वैसा आचरण करना होगा। तमोगुणी मंत्र तामसिक आचरण में फल देंगे। गायत्री मंत्र की तो प्रशस्त भूमि वह है जहाँ देसी गाय रहती हो, गाय के शरीर से सात्विकता आती है, गंगा जैसी पवित्र नदियों का सान्निध्य हो, गंगा की लहरों में सात्विकता है, कहीं सुंदर-सुरम्य प्रकृति का एकांत हो या फिर अपने घर का एक पवित्र सा कोना हो, मतलब आपको सतोगुणी वातावरण में गायत्री मंत्र का फल मिलता है। देसी गाय को वेद लक्षणा गौ कहा जाता है। गायत्री वेदमाता है और गाय वेद लक्षणा हैं। साथ में गीता का पाठ करते हैं तो और भी अच्छा है। गौ, गंगा, गीता और गायत्री भारतीय संस्कृति के चार स्तंभ हैं।

प्रश्न- मेरी एक जिज्ञासा है, सामान्य तौर पर देखा जाता है कि बड़े व्यक्तियों के निधन के पश्चात उनका दाह-संस्कार किया जाता है, जबकि छोटे बच्चों के निधन पर उसे दफनाया जाता है, इस परंपरा के पीछे शास्त्रीय, आध्यात्मिक या सामाजिक कारण क्या है? कृपया समझाने की कृपा करें।

उत्तर- नवजात शिशु को सिर्फ दफनाया ही नहीं जाता नदी या पानी में बहा भी दिया जाता है। प्रौढ़ हो जाने पर, शरीर के प्रति आसक्ति बढ़ जाती है, अगर उनके शरीर को अग्नि में न जलाया जाए तो वो प्रेत बनकर भटकेंगे, शरीर की आसक्ति को नष्ट करने के लिए जलाया जाता है। अग्नि सभी को पवित्र करती है, आसक्ति मुक्त करती है, इसलिए बड़े लोगों को जलाया जाता है। बड़े लोगों के व्यक्तित्व की चेतना पूर्ण विकसित हो चुकी है और आसक्तियां भी घनीभूत हो चुकी हैं, छोटे बच्चे में आसक्ति नहीं है। तो उसे हम प्रवाहित कर सकते हैं जल में, या जमीन में दफना सकते हैं। उनके लिए अलग कर्मकांड करते हैं कि उनकी आत्मा अगली यात्रा के लिए निकले। अकाल मृत्यु की यात्रा वैसे भी आसान नहीं होती है। ऐसा नहीं है कि हर जगह बच्चे को दफनाते हैं, छोटे बच्चों को बिल्व आदि वृक्ष के नीचे गड्ढा खोदकर गाड़ते हैं। उसका कर्मकांड अलग है। उस शरीर को वृक्ष की सात्विकता, वृक्ष की ऊर्जा, वृक्ष का सान्निध्य मिलता है, और कर्मकाण्ड उनकी आत्मा को बस गति देता है। वैसे अब जलाना ही देश- काल-परिस्थिति के अनुसार सही है, विदेशों में तो अब सभी को जलाया ही जाता है, क्योंकि कब्र के लिए उतनी जमीन कहाँ से आएगी। भारतीय संस्कृति में विवेक और वैराग्य को प्रधानता दी गई है, हमारी संस्कृति में आध्यात्मिकता और ईश्वरोन्मुख जीवन शैली पर विश्वास ज्यादा है। हम हर व्यक्ति को ईश्वर प्राप्ति कराना चाहते हैं, इसलिए हमलोगों ने हर चीज़ का विकास उसी

तरह किया है। वैसे देश-काल- परिस्थिति के अनुसार अपनी भारतीय संस्कृति में हर चीज़ का विधिवत विधान है, ताकि जीवात्मा आगे की ओर बिना अवरोध के गति कर सके।

मार्च माह की गतिविधियाँ

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा - दिनांक 1 मार्च 2026 को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी ने विदेशों में प्रचलित आज के युग की एक नई समस्या कानूनन लिंग परिवर्तन की जानकारी दी। अर्थात कुछ लड़के ही से शी और कुछ लड़कियां शी से ही बन रही हैं । जबकि कुछ दोनों ही रहना चाहते हैं जिसको कानूनी मान्यता नहीं है। यह सब भावनात्मक विक्षोभ है के कारण उत्पन्न समस्या है।

आयोजित सत्र में उपस्थित गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे एवं श्रद्धालुगण...

प्राकृतिक चिकित्सालय में यज्ञ

आयोजित सत्र में अपने विचारों को साझा करते श्री राकेश कुमार जी, अवकाश प्राप्त रॉ डायरेक्टर...

यज्ञशाला में यज्ञ

उपनयन संस्कार

उपनयन संस्कार में भिक्षाटन

तुलादान

वेद माता गायत्री

अखण्ड दीप

कच्छप और नन्दी के साथ देवों के देव महादेव...

चिकनी मिट्टी से होली खेलते युवा प्रकोष्ठ

होली मिलन समारोह को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ अरुण कुमार जायसवाल...

शहर के सुधिजन मिलन समारोह को संपूर्ण करते हुए...

होलिका दहन के अवसर पर सामूहिक पूजन करवातीं गायत्री शक्तिपीठ की देव कन्याएं...

होली गान प्रस्तुत करते बाल संस्कारशाला के बच्चे...

योग कला का प्रदर्शन करते प्रज्ञा शिक्षण संस्थान के बच्चे....

कार्यक्रम में चार चांद लगाते स्वरांजलि के कलाकार....

अपनी प्रस्तुति देतीं स्वरांजलि की गायिका भाग्यश्री...

पहली बार तबला पर अपनी प्रस्तुति देते शाश्वत..

ईशान गढ़वाल....

तबला वादक सह गायन कला का प्रदर्शन करते शंकर जी...

पीहू और समृद्धि

क्षमा और शिल्पी....

कलाकार गणों की प्रस्तुति

लघु नाटक, शिक्षा की दुकान की प्रस्तुति देते बाल संस्कारशाला के बच्चे...

पकौड़े और दहीबड़ा का आनंद उठाते भक्तगण

रात के बारह बजे होलिका दहन...

वेद माता गायत्री

दैनिक यज्ञ

जन्म दिवस संस्कार

खुशी से नाचो, रंगों से खेलो और होली की भावना को खुले दिल से अपनाओ! अब अगले साल का इंतज़ार

प्रज्ञेश्वर महादेव, कच्छप महाराज और नंदी महाराज, के प्रति नमन वंदन करतीं बालिका...

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

रविवार को आयोजित गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा का संचालन करते डॉक्टर श्री अरुण कुमार जायसवाल जी...

महिला दिवस के मौक़े पर डॉ अरुण कुमार जायसवाल का उद्बोधन सुनते हुए श्रोतागण

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री नागेश और प्रोफेसर श्री मानवेंद्र एवं उनका परिवार

संबोधित करती हुईं प्रोफेसर परिणीति,दिल्ली विश्वविद्यालय

संबोधित करते हुए प्रोफेसर मानवेंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

संबोधित करते हुए प्रोफेसर नागेश, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रज्ञेश्वर महादेव, विष्णु स्वरूप कच्छप और भगवान शिव के पार्षद नन्दी...

रविवार का दिन ...माता गायत्री के दर्शन..

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा - दिनांक 15 मार्च 2026 को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी ने नारी के कितने रूप के विषय में बताते हुए कहा कि "नारी पारस की तरह होती है। वह प्रेम नहीं करती, प्रेम में बसती है। जिस रिश्ते को छूती है उसे प्रेम से भर देती है। स्त्री होना सौभाग्य है या दुर्भाग्य, यह व्यवस्थाओं का विषय है, लेकिन स्त्री का अस्तित्व में होना उत्सव का विषय है" ।

आयोजित सत्र में उपस्थित गायत्री कम्प्यूटर शिक्षण संस्थान के बच्चे और श्रद्धालुगण...

आयोजित सत्र में उरई यूपी से आई रश्मि और उनके बच्चे ...

दिनांक 15 फरवरी (रविवार) 2026 गायत्री शक्तिपीठ, बेगूसराय में उपजोन स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया।पांचों जिले(सहरसा, सुपौल, मधेपुरा,खगड़िया,बेगूसराय) की बैठक आदरणीय उपजोन समन्वयक आदरणीय डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी की उपस्थिति में संपन्न हुई। उपस्थित परिजनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा प्रत्येक तीन महीने पर हम सभी मिलते हैं पिछले कार्यों की समीक्षा करते हैं एवं आगामी कार्य योजना बनाते हैं।बैठक में निम्न विषयों पर विशेष चर्चा हुई।

➔ पिछले तीन माह के प्रगति प्रतिवेदन पर विमर्श...

➔ पूर्व से निर्धारित उपासना विषय पर प्रत्येक जिला प्रतिनिधि द्वारा चर्चा।

➔ शताब्दी अनुयाज कार्यशालाओं एवं कार्यक्रमों से संबंधित विषय पर केंद्रीय स्तर पर करणीय कार्य पर विमर्श।

➔ जिला संयोजकों एवं युवा जिला संयोजकों द्वारा अपने क्षेत्र में किए गए कार्यों का विवरण साथ हीं आगामी कार्ययोजना पर चर्चा की गई।

➔ अखंड ज्योति पाठकों की सदस्यता बढ़ाने हेतु विमर्श।

➔ भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पर चर्चा हुई एवं शांतिकुंज द्वारा भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा हेतु निर्धारित आगामी तिथि (12 सितंबर 2026), की घोषणा की गई।

➔ आगामी यज्ञों की श्रृंखला (24 कुंडिय,51 कुंडिय) यज्ञों के मांग पत्र की स्थिति पर विमर्श।

वासंती नवरात्रि की तैयारी... गायत्री शक्तिपी, सहरसा की संस्कारशाला के बच्चों के द्वारा साफ़ सफ़ाई...

वासंती नवरात्र प्रथम दिवस माता श्री शैलपुत्री पूजन...

दर्शकों को संबोधित करते आदरणीय डॉ अरुण कुमार जायसवाल....

पूजन करवातीं देव कन्याएं....

पूजन व्यवस्था संभालती देवकन्याएँ....

उपस्थित साधक गण...

पुष्पांजलि हेतु कतारबद्ध श्रद्धालुगण...

स्वाध्याय हेतु पुस्तक खरीदते व प्रसाद प्राप्त करते श्रद्धालुगण....

वासंती नवरात्रि के पावन प्रथम दिवस माता शैलपुत्री के पूजन के बाद काल में भक्तों के बीच राम कथा में नारी पात्र में माता सीता की कथा सुनाते आदरणीय डॉ० श्री अरुण कुमार जायसवाल जी

गीत प्रस्तुत करती बाल संस्कारशाला की बच्चियां

उत्साह पूर्वक संगीत बजाते हमारे गायत्री शक्तिपीठ के कार्यकर्तागण

पूजन में उपस्थित श्रद्धालुगण

भक्तों को संबोधित करते आदरणीय डॉ० श्री अरुण कुमार जायसवाल

द्वितीय रूप माता श्री ब्रह्मचारिणी का पूजन करवाते देवकुमार

जप करते हुए डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल।

साधना में लीन दिखते साधकगण

उपस्थित श्रद्धालुगण

पूजन प्रक्रिया में भाग लेते दिल्ली से आये दिव्यांग पाण्डेय और शिवांग पाण्डेय...

तृतीय रूप: माता श्री चंद्रघंटा का पूजन करवातीं देवकन्यायें...

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा, में वासंती नवरात्रि का तीसरा दिन

संध्या काल में भक्तों के बीच राम कथा में नारी पात्र में सीता जी का परिचय और परिणय पर बोलते व भजन सुनाते आदरणीय डॉ० श्री अरुण कुमार जायसवाल

गुरुदेव के विचार को कहानी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाते गायत्री परिवार के कार्यकर्तागण

आरती में भाग लेते भक्तगण

चैत्र नवरात्रि के चौथे दिन माता कूष्मांडा के पूजन, जप, ध्यान के साथ-साथ विभिन्न संस्कार भी आज उपासना कक्ष में सम्पन्न हुए...

अन्न प्रासन्न संस्कार

पुंसवन संस्कार

विद्यारंभ संस्कार...

नवरात्रि की पूर्णाहुति के अमृतासन की तैयारी में अनाज को साफ़ करने में जुटी महिला मंडल...

सांयकालीन कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते नूतन सिंह जी और शंकर जी...

गुरुदेव के विचारों के रखते ज्योति, संजनी और सुमन...

प्रज्ञा गीत गातीं संजनी, निधि, प्रतिज्ञा

रामकथा में नारी पात्र में कुशल गृहिणी, आदर्श पत्नी सीता की चर्चा करते हुए अरुण कुमार जायसवाल...

पंचम रूप माता श्री स्कंदमाता की महत्ता को समझाते डॉ अरुण कुमार जायसवाल...

पूजन करवाते देव कुमार...

प्रार्थना का क्रम...

जप में मग्न देव कन्याएं...

संध्या काल में भजन करते और राम कथा में नारी पात्र के अंतर्गत माता सीता के लौकिक जीवन में अलौकिक शक्तियों का वाचन करते

गुरुदेव के विचार को कहानी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करते बाल संस्कार शाला के बालक एवं बालिका

गीत प्रस्तुत करते बाल संस्कारशाला के बालक

संध्याकालीन कीर्तन भजन करते कलाकार...

प्रत्येक दिन की तरह आज भीषण आंधी और वर्षा में भी जरूरतमंदों के बीच अनवरत भोजन वितरण करता गायत्री शक्तिपीठ सहरसा....

वासंती नवरात्रि षष्ठम् रूप: श्री कात्यायनी माता का दिव्य दर्शन

पूजन करवातीं देवकन्याएं

पूजन में भाग लेते श्रद्धालुगण

जप और तप करते साधक गण

चैत्र नवरात्रि की पूर्णाहुति की व्यवस्था हेतु गोष्ठी

संध्या काल में राम कथा में नारी पात्र में माता सीता के वन प्रेम का वाचन करते हुए आदरणीय डॉ० श्री अरुण कुमार जायसवाल

गुरुदेव के विचार को कहानी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करते बाल संस्कारशाला के बालक एवं बालिका

सप्तम रूप मां कालरात्रि स्वरूप मां गायत्री विग्रह दर्शन एवं पूजन प्रक्रिया में भाग लेते सभी साधकगण

इस अवसर आयरलैंड से आए हुए योगीश भट्ट और उनकी धर्मपत्नी शालिनी जी ने अपने बच्चे का अन्नप्राशन संस्कार करवाया और अपने अनुभवों को रखते हुए कहा कि वो इतना कुछ गुरुदेव के कृपा प्रसाद से कर पाए हैं...

इस अवसर पर संतोष जी (ADJ) सहरसा से ट्रांसफर होने पर गायत्री शक्तिपीठ सहरसा ने उनका स्वागत किया एवं भेंट स्वरूप मंत्र चादर और स्मारिका देकर उन्हें विदाई दी गई....

अभिषेक करते एडीजे श्री संतोष जी,सपरिवार

सायंकालीन कार्यक्रम को संबोधित करते आदरणीय अरुण कुमार जायसवाल...

गीत के माध्यम से गुरुदेव के विचारों को रखते हुए बाल कलाकार

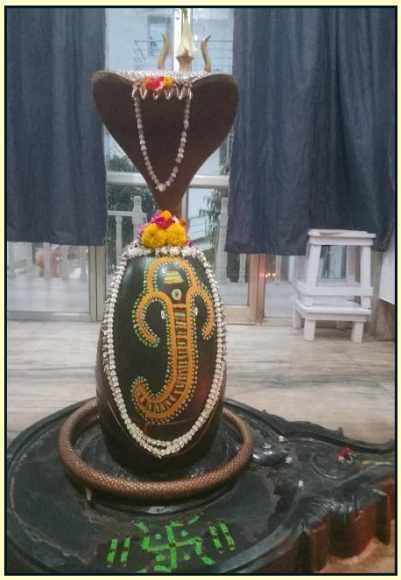

प्रज्ञेश्वर महादेव मन्दिर, गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा - दिनांक 26 मार्च 2026 को रामनवमी पूजन और पूर्णाहुति के अवसर पर श्रोताओं को संबोधित करते हुए डॉ अरुण कुमार जायसवाल जी ने कहा कि आज अष्टम दिवस को महागौरी का पूजन सहस्त्र चक्र पर हुआ, जिससे जीवन में आनंद ही आनंद प्राप्त होता है।

आचार्य की भूमिका में पूजन करवातीं देव कन्याएं...

प्रतिज्ञा उम्र 15 कक्षा 9

निधि उम्र 13 कक्षा 8

जूली उम्र 14 कक्षा 9 (क्रमशः दाएं से बाएं)

उपस्थित श्रद्धालुगण

पुष्पांजलि...

गुरुदेव के विचार को कहानी के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करते बालसंस्कार शाला के बच्चे मनीष कक्षा 5 और प्रतिज्ञा कक्षा 9....

सायंकालीन आरती कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देती नूतन सिंह जी एवं शंकर जी और मिथिलेश चौधरी जी

संध्या काल आरती में भाग लेते श्रद्धालुगण.....

वासंती नवरात्रि अनुष्ठान की पूर्णाहुति के साथ आज गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में माँ दुर्गा के नवम रूप मां सिद्धदात्री का पूजन संपन्न हुआ....

यज्ञ करते श्रद्धालुगण

आदरणीय डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने भक्तों को संबोधित करते हुए कहा कि इस बार यज्ञ इस भाव से करें कि जैसे हम अयोध्या में हो...अयोध्या अर्थात जहां युद्ध नहीं होता इस समय पूरा विश्व युद्ध की समस्या से जूझ रहा है...

पूर्णाहुति हेतु पूजन सामग्री तैयार करती महिला मंडल

पूर्णाहुति हवन करवाती देवकन्याएं...

ध्यान करती गायत्री परिवार की नन्हीं मुन्नी साधिका...

स्वागत द्वार पर श्रद्धालुओं का अभिवादन करता युवा मंडल...

जूता चप्पल स्टॉल पर सेवा देते गायत्री परिवार के स्वयंसेवक गण ...

अमृतासन का लुफ्त उठाते भक्तगण

भोजन प्रसाद वितरण में तत्पर महिला मंडल...

पुष्पांजलि हेतु कतारबद्ध सहरसावासी...

मार्च माह का अंतिम रविवार दिनांक : 29/03/2026 को सहरसा जिला के सलखुआ प्रखण्ड के हरीपुर गांव में अलग- अलग नए 24 घरों में देव स्थापना एवं एक कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। साथ ही, पर्यावरण संतुलन एवं शुद्धिकरण हेतु प्रत्येक घरों में पौधा वितरण किया गया | गुरुदेव के सद्विचारों को अखण्ड ज्योति पत्रिका एवं दीवार लेखन के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास किया गया। जिसमें गायत्री परिवार सहरसा के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं प्रज्ञा मंडल के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने अहम भूमिका निभाई।

दैनिक समाचार पत्रो में गायत्री शक्तिपीठ सहरसा की छपी खबरें

साधना से पशु प्रवृति पर रोक

सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कारसत्र आयोजित हुआ। सत्र को संबोधित करते डा अरूण कुमार जायसवाल ने कहा जीवन में जब काम भूख और नींद हावी हो जाए तो यह समझे कि हमारे अंदर पशु प्रवृत्ति की अधिकता हो गई है। इसलिए भावनात्मक परिष्कार बहुत कठिन है। जो उपासना साधना आराधना से विकसित होता है। भूतपूर्व रॉव पदाधिकारी राकेश कुमार ने संबोधित करते हुए कहा इस परिवार में आकर अच्छा लगता है। युवा बच्चों के लिए बहुत ही अच्छा है, जो अच्छा ईन्सान बनने में मदद मिलेगा।

कार्यक्रम के दुसरे सत्र में ट्रस्ट की बैठक हुई जिसमें शक्तिपीठ के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं सभी ट्रस्टी एवं। कार्यकारिणी समिति के सभी परिजन उपस्थित थे। मौके पर आगामी होली पर्व को लेकर कार्यक्रम

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

प्रतिनिधि, सहरसा

कार्यक्रम में भाग लेते युवा.

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने एक नयी समस्या को समझाते हुए ही एवं शी के विषय में विशेष जानकारी देते कहा कि ही यानी लड़का, सी मानी लड़की. ही को सी कह देते हैं एवं सी को ही कह देते हैं. यहां कुछ लड़के लड़कियां ही से सी बन रही हैं एवं सी से ही बन रही है. यानी जेंडर चैंज करा रही है. ऑपरेशन द्वारा. जैसे ही आप ही से सी बनने के प्रोसेस में गये या सी से ही बनने के प्रोसेस में गये तो आप सी को ही नहीं कह सकते हैं एवं ही को सी नहीं कह सकते. आज की ढेर सारी समस्याओं में एक नयी समस्या यह भी देखने को मिल रही है. उन्होंने कहा कि एक दूसरी समस्या भी आजकल देखने को मिल रही है कि मां बाप जो बाहर विदेश में रहते हैं, बच्चे बड़े हो गये, अच्छी नौकरी है अच्छा पैसा मिल रहा है देखने में भी सुंदर है, लेकिन विवाह नहीं हो रहा है. अब एक लड़की है, अच्छी है, अच्छी कंपनी में अच्छा पैसा कमा रही है, उसकी मां कह रही है उसको कोई लड़का मिल नहीं रहा है. वह इतनी डरी हुई कि कोई उसको प्रोपोज भी करता है तो डिसाइड नहीं कर पाती है. अभी इस प्रकार की समस्या बाहर के देशों में है, जहां भारतीय बसे हुए हैं. आज पूरी दुनिया एक ग्लोबल विलेज है. एक गांव में तब्दील हो गयी है. इस अवसर पर भूतपूर्व रॉव पदाधिकारी राकेश कुमार ने भी सत्र को संबोधित करते कहा कि इस परिवार में आकर अच्छा लगता है. यहां पीडीसी का क्लास चलाया जाता है. वह युवा बच्चों के लिए बहुत ही अच्छा है. कार्यक्रम के दूसरे सत्र में ट्रस्ट की बैठक हुई. जिसमें शक्तिपीठ के युवा मंडल, युवती मंडल, महिला मंडल एवं सभी ट्रस्टी एवं कार्यकारिणी समिति के सभी परिजन शामिल थे. जिसमें मुख्य रुप से ज्ञान रथ, पुस्तक मेला एवं चेतना शिविर चलाने की बात हुई. वहीं दो मार्च को होलिका दहन का कार्यक्रम रात्रि 11.50 से होगा. इसके साथ ही 19 मार्च से बासंती नवरात्र शुरु होगा.

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

- डॉ. अरुण जायसवाल ने मातृत्व की दिव्यता पर दिया प्रेरक उद्बोधन
- पारिवारिक जीवन में संवाद और आत्मीयता की आवश्यकता पर बल
- स्त्री स्वभाव की गहराई को समझाने के लिए रामायण के प्रसंगों का किया उल्लेख

अंग भारत। सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में वक्ताओं ने पारिवारिक जीवन में प्रेम, त्याग और मातृत्व के महत्व पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुणकुमार जायसवाल ने कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन सच्चा मातृत्व विरले ही लोगों में दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि मां बनना एक जैविक घटना है, जबकि मातृत्व एक दैवी अनुभूति है, जो त्याग, करुणा और सेवा की भावना से प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि जब पत्नी अपने पति के प्रति संतानवत भाव से उसका ख्याल रखने लगती है, तब प्रेम की पूर्णता मानी जाती है। परिवार में सौहार्द, अपनापन और विश्वास बनाए रखने के लिए प्रेम और ईमानदारी सबसे जरूरी तत्व है। उन्होंने कहा कि आज परिवारों में संवाद और आत्मीयता की जो संस्कृति थी, वह धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है, जिसे पुनः विकसित करने की आवश्यकता है। डॉ. जायसवाल ने स्त्री के व्यक्तित्व को रहस्यमय बताते हुए कहा कि उसके भीतर सत, रज और तम तीनों गुण विद्यमान रहते हैं। उन्होंने रामायण के प्रसंगों का उल्लेख करते हुए माता सीता और लक्ष्मण से जुड़ी घटनाओं के माध्यम से स्त्री स्वभाव की गहराई को समझाया। कार्यक्रम में श्यामनन्दलाल दास सहित अनेक श्रद्धालु और गायत्री परिवार के कार्यकर्ता उपस्थित रहे। वक्ताओं ने कहा कि परिवार और समाज में प्रेम, त्याग और परस्पर सम्मान की भावना ही जीवन को सार्थक और सुखमय बनाती है।

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का हुआ आयोजन

डॉ. अरुण जायसवाल ने मातृत्व की दिव्यता पर दिया प्रेरक उद्बोधन

स्त्री स्वभाव की गहराई को समझाने के लिए रामायण के प्रसंगों का किया उल्लेख

सहरसा/संवाददाता। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में रविवार को आयोजित व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में वक्ताओं ने पारिवारिक जीवन में प्रेम, त्याग और मातृत्व के महत्व पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य ट्रस्टी डॉ. अरुणकुमार जायसवाल ने कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन सच्चा मातृत्व विरले ही लोगों में दिखाई देता है। उन्होंने कहा कि मां बनना एक जैविक घटना है, जबकि मातृत्व एक दैवी अनुभूति है, जो त्याग, करुणा और सेवा की भावना से प्रकट होती है। उन्होंने कहा कि जब पत्नी अपने पति के प्रति संतानवत भाव से उसका ख्याल रखने लगती है, तब प्रेम की पूर्णता मानी जाती है। परिवार में सौहार्द, अपनापन और विश्वास बनाए रखने के लिए प्रेम और ईमानदारी सबसे जरूरी तत्व हैं। उन्होंने कहा कि आज परिवारों में संवाद और आत्मीयता की जो संस्कृति थी, वह धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है, जिसे पुनः विकसित करने की आवश्यकता है।

सहरसा जागरण — भागलपुर 09 मार्च, 2026 — दैनिक जागरण 7

परिवार में बिना झिझक के बात कहने की विकसित हो संस्कृति : डा. अरूण

संस, सहरसा: रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित हुआ। संबोधित करते हुए ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ने कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन मातृत्व विरले के मन में होता है। मां बनना तो एक जैविक घटना है, पर मातृत्व का होना एक दैवी घटना है। प्रेम और मातृत्व में बहुत फर्क है। प्रेम पत्नी पति के प्रति करती है। पश्चिम के एक दार्शनिक है, निन्जिसकी,ने कहा कि नारी का प्रेम कब पूर्ण होता है, जब उसको अपने पति में अपनी संतान दिखने लगती है। वह पति का पुत्रवत ख्याल रखती है। यह बात सबसे पहले भारत में कही गई, फिर इस बात को विदेशों में भी लोगों ने कहा। कहा कि प्रेम जब पूर्ण होता है तो वह पत्नी की जगह माता बन जाती है। पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया। यह संतानवत प्रेम बहुत विरले है बहुत मुश्किल है। कहा कि पिता मतलब पालनकर्ता और गुरु मतलब समाधानकर्ता। घर परिवार मेंजो आपस में प्रेम, अपनापन, बिना झिझक के, डर के, अपनी बात एक दूसरे से कह सकते हैं, वह संस्कृति अब विलीन हो रही है। उसे फिर से विकसित करने की आवश्यकता है। मौके पर बड़ी संख्या में छात्र- छात्राएं व गायत्री परिजन मौजूद रहे।

संबोधित करते ट्रस्टी • जागरण

रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में कार्यक्रम में मौजूद युवा।

मातृत्व का होना दैवी घटना : अरूण

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए डाक्टर अरुणकुमार जायसवाल ने मातृत्व दिवस के संबंध में कहा प्रेम किसी के मन में हो सकता है लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है। मां बनना तो एक जैविक घटना है पर मातृत्व का होना एक दैवी घटना है। प्रेम और मातृत्व में बहुत फर्क है। प्रेम और ईमानदारी स्वतः स्फूर्त होता है।

जन्म का उद्देश्य पूरा करने के बाद आगे बढ़ने पर होती है जीवात्मा को संतुष्टि : डॉ अरुण

प्रतिनिधि, सहरसा

कार्यक्रम में भाग लेते श्रद्धालु.

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने मातृत्व दिवस के संबंध में कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है. लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है. मां बनना तो एक जैविक घटना है. लेकिन मातृत्व का होना एक दैवी घटना है. प्रेम व मातृत्व में बहुत फर्क है. प्रेम पत्नी, पति के प्रति करती है.

प्रेम जब पूर्ण होता है तो वह पत्नी की जगह माता बन जाती है. पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया. उन्होंने कहा कि पिता मतलब पालनकर्ता व गुरु मतलब समाधानकर्ता. घर परिवार में जो आपस में प्रेम, अपनापन, बिना झिझक के, डर के, अपनी बात एक दूसरे से कह सकते हैं, वह संस्कृति अब विलीन हो रही है. उसे फिर से विकसित करने की आवश्यकता है. परिवार में, समाज में सुव्यवस्था नियमों से ही नहीं आती है.

यह प्रेम एवं ईमानदारी से आती है. मूल रूप से स्त्री की संपूर्णता संतान में है. जन्म देते वक्त, सिर्फ एक जन्म नहीं होता दो जन्म होता है. एक संतान का और एक मां का. स्त्री का व्यक्तित्व रहस्यमयता को लिए होता है. उसी तरह पुरुष का भाग्य भी रहस्यमय होता है. इसे देवगण भी नहीं जान पाते तो मनुष्य कैसे जान पायेगा. वैसे भी जीवात्मा को संतुष्टि तब होती है, जब वह अपने जन्म का उद्देश्य पूरा करता है. जब वह अपने जन्म के उद्देश्य के प्रति आगे बढ़ता है, तभी से संतुष्टि शुरू हो जाती है. स्त्री का व्यक्तित्व जितना रहस्यमय होता है उतना ही पुरुष का भाग्य रहस्यमय होता है. जैसे भाग्य को पूरी तरह से जांचा परखा नहीं जा सकता. उसी तरह स्त्री का चरित्र भी पूरी तरह जाना नहीं जा सकता.

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित

जब नारी के अंदर मातृभाव आ जाता है तो उसे अपनी पति की गलती दिखाई नहीं देती : डॉ अरुण

मीडिया लाइव न्यूज, सहरसा। गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया।इस सत्र को संबोधित करते हुए डा अरुणकुमार जायसवाल ने मातृत्व दिवस के संबंध में कहा प्रेम किसी के मन में हो सकता है लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है। माँ बनना तो एक जैविक घटना है पर मातृत्व का होना एक दैवी घटना है। प्रेम और मातृत्व में बहुत फर्क है। प्रेम पत्नी पति के प्रति करती है। पश्चिम का एक दार्शनिक है, निन्जिसकी, उसने कहा कि नारी का प्रेम कब पूर्ण होता है जब उसको अपने पति में अपनी संतान दिखने लगती है। वह पति का पुत्रवत ख्याल रखती है। ये बात सबसे पहले भारत में कही गई, फिर इस बात को विदेशों में भी लोगों ने कहा। प्रेम जब पूर्ण होता है तो वह पत्नी की जगह माता बन जाती है। पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया। ये संतानवत प्रेम बहुत विरल है बहुत मुश्किल है। 24 घंटे में वह 10, 20 मिनट के लिए पत्नी होती होगी, रिश्ता तभी पूर्ण होता है जब वह दोस्त बनती है और माता बनती है। दोस्त की तरह परिवार में, घर में भय और कलह का वातावरण नहीं वरण घर का वातावरण हल्का फुल्का रखना, माँ की तरह हमेशा त्याग की भावना रखना, उसी तरह पति भी 10, 20 मिनट के लिए पति होता है पर 24 घंटे उसे पिता और गुरु बनना पड़ता है। पिता मतलब पालनकर्ता और गुरु मतलब समाधानकर्ता। घर परिवार में जो आपस में प्रेम, अपनापन, बिना झिझक के, डर के, अपनी बात एक दूसरे से कह सकते हैं, वो संस्कृति अब विलीन हो रही है। उसे फिर से विकसित करने की आवश्यकता है। परिवार में, समाज में सुव्यवस्था नियमों से ही नहीं आती है, प्रेम और ईमानदारी से आती है। प्रेम और ईमानदारी के लिए कोई नियम की आवश्यकता नहीं है वह तो स्वतःस्फूर्त होता है। प्रायः प्रायः क्या देखा जाता है, पत्नी पति से प्रेम तो करती है लेकिन पति को अपने बराबर का अपना समकक्ष मानते हैं। कहीं कहीं तो पति को पत्नी अपना कॉम्पिटिटर यानी प्रतिद्वंदी भी मानती है। लेकिन जब पति के प्रति पत्नी का संतान भाव आ जाता है तो उसकी सेवा, उसकी देखरेख उसका केयर करती है। फिर उलाहना नहीं देती हैं, फिर शिकायत नहीं करती हैं, फिर नाराज नहीं होती है, फिर रूठती नहीं है। फिर वह यह नहीं कहती कि अरे तुमने कब कहा था ये करने के लिए, तुमने मेरा ख्याल नहीं रखा, तुमने जो कहा था वह पूरा नहीं किया। माता और संतान में एक खास बात होती है कि माता को अपने संतान की गलती दिखाई नहीं देती। जब नारी के अंदर मातृभाव आ जाता है तो उसे अपनी पति की गलती दिखाई नहीं देती। अरे कुछ किया होगा छोड़ो जाने दो। तो मूल रूप से स्त्री की सम्पूर्णता संतान में है। वैसे हम लोग कहते है न, जन्म देते वक्त, सिर्फ एक जन्म नहीं होता दो जन्म होता है, एक संतान का और एक माँ का, माँ का भी जन्म होता है अभी तक वह पुत्री थी बहन थी पत्नी थी अब वह माँ भी हैं। सचमुच संतान से नारी पूर्ण होती है।कहते है त्रियाचरित्रं पुरुषस्य भाग्यम, देवो न जानाति कुतः मनुष्यः, ये संस्कृत का सुभाषित है। लगता है इसमें स्त्री की निंदा है लेकिन इसमें स्त्री की निंदा का भाव नहीं है इसमें भाव है रहस्यमयता का। त्रिया मतलब स्त्री और चरित्र मतलब व्यक्तित्वा नारी के जीवन का अधिकांश भाग रहस्यमय होता है, जो तल पर है उससे अधिक गहरे में होता है। स्त्री का व्यक्तित्व रहस्यमयता को लिए होता है उसी तरह पुरुष का भाग्य भी रहस्यमय होता है। इसे देवगण भी नहीं जान पाते तो मनुष्य कैसे जान पाएगा? त्रिया मतलब स्त्री, पर हर स्त्री त्रिया नहीं होती है। त्रिया का अर्थ है तीनों गुणों की विशेषताओं से संपन्न, मतलब सत रज तम तीनो उसमें हाजिर है। तीन से त्रिया हुआ। कब तमोगुणी बन जाएगी, कब रजोगुणी बन जाएगी और कब सतोगुणी बन जाएगी पता ही नहीं चलता। इसलिए सामान्य लोग कहते हैं स्त्री कब बदल जाएगी, कब न्योछावर हो जाएगी, पता नहीं चलता। एक प्रकार से छलना है, एक रहस्य है, उस रहस्य के परतों को इंसान क्या देवता भी अनावृत नहीं कर पाते। अद्भुत है, स्त्री जब त्रिया का रूप ले लेती है तो अगम्य हो जाती है। उसका पार नहीं पा सकते।सभी स्त्री में कभी कभी त्रिया आ जाती है। सीताजी में त्रिया आ गई तो सीताजी ने लक्ष्मण को बहुत गाली दी, जब रामजी हिरण ढूंढने गए और मारीच ने मन में बोला हे राम और जोर से चिल्लाया हा लक्ष्मण। यह सुनकर लक्ष्मण जी को बहुत गलियायी और यहाँ तक गलियायी कि तुम्हारी नजर मुझ पर है तुम चाहते हो कि राम मर जाए और तुम मुझे हथिया लो। अब ये बात लक्ष्मण के लिए मृत्यु से ज्यादा कष्टकारी थी। जो लक्ष्मण कभी सीताजी का मुख देखा ही नहीं, जब अपहरण के समय विमान से सीताजी ने आभूषण गिरा दिए थे तो लक्ष्मण ने केवल पांव की पाजेब और बिछुवा देखा था वे कहते हैं मैं प्रणाम करता था तो ये चीजे मालूम है बाकी आभूषण को वे नहीं पहचान पाए। ऐसे तपस्वी लक्ष्मण पर भी सीता जी ने आरोप लगा दिया, लेकिन इसके पीछे भी कुछ निहितार्थ है। पूरी बात समझने पर सही सम्यक ज्ञान हो पाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी कहते है कि रामचंद्रजी का संकल्प था रावण का नाश, उनको लीला तो करनी ही थी, अरण्य कांड में सीता जी को राम जी कहते हैं अब मैं लीला करूँगा तुम अग्नि में वास करो, मूल सीता अग्नि में चली गयी और उनका प्रतिरूप बाहर निकल कर आया यानी छाया सीता का अपहरण हुआ। छाया सीता भी उसी तरह रूपवान थी, शीलवान थी, पवित्र थी। यह घटना लक्ष्मण के सामने नहीं घटित हुई थी, लक्ष्मण कंदमूल लाने वन में निकल गए थे। इसलिए यह छाया सीता वाली बात लक्ष्मण जी को नहीं मालूम था। पंचवटी में रावण ने छाया सीता का अपहरण किया था। लक्ष्मण के प्रति यह वक्तव्य छाया सीता का था, न कि मूल सीता का था। तो लीला अलग है, उद्देश्य अलग है। वैसे भी जीवात्मा को संतुष्टि तब होती है जब वह अपने जन्म का उद्देश्य पुरा करता है। जब वह अपने जन्म के उद्देश्य के प्रति आगे बढ़ता है, तभी से संतुष्टि शुरू हो जाती है। तो स्त्री का व्यक्तित्व जितना रहस्यमय होता है उतना ही पुरुष का भाग्य रहस्यमय होता है। जब लक्ष्मण को पचासों गालियां दीं तो ये तमोगुण हुआ सीता जी में, जब राम जी को बहका दी कि जाओ सोने का हिरण मारकर लाओ ये रजोगुण हुआ, जब राम जी की सेवा करती है, उनका ख्याल रखती है, तो उनका यह सतोगुण हुआ। त्रिया चरित्र का दूसरा उदाहरण राजा विक्रमादित्य की पत्नी रानी पिंगला, यशस्वी, वीर, प्रतिभावान, भावना शील राजा विक्रमादित्य पिंगला को पहचान नहीं पाए।

गायत्री शक्तिपीठ में 'नारी तेरे कितने रूप' विषय पर परिचर्चा आयोजित

आंदोलन ब्यूरो, सहरसा

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को 'व्यक्तित्व परिष्कार' सत्र के अंतर्गत 'नारी तेरे कितने रूप' विषय पर परिचर्चा आयोजित की गई। मुख्य वक्ता डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने नारी के मातृत्व और धैर्य की महत्ता पर प्रकाश डाला। डॉ. जायसवाल ने कहा कि मातृत्व एक दैवी घटना है। भारतीय संस्कृति में नारी के धैर्य और प्रतीक्षा की शक्ति अद्वितीय है। उन्होंने कहा कि भारत में विधवा स्त्री द्वारा वैधव्य को मर्यादा और साध्वी के रूप में जीने की जो प्राचीन परंपरा है, वह विश्व में कहीं और नहीं है। स्त्री अपने सामर्थ्य से तपस्विनी और साध्वी बनकर जीवन के साथ ही जीवन के बाद भी प्रेम निभाने का साहस रखती है। परिचर्चा में भौतिक कुशलता और आध्यात्मिक जीवन दृष्टि के समन्वय को विश्व शांति के लिए आवश्यक बताया गया।

मातृत्व के कारण स्त्री होती पूजनीय

सहरसा। रविवार को गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन हुआ। सत्र को संबोधित करते हुए डा. अरूण कुमार जायसवाल ने नारी के रूप, मनोभाव, मातृत्व, प्रेम पर व्याख्यान दिए। उन्होंने कहा स्त्री अपने सौंदर्य के कारण नहीं अपने मातृत्व के कारण पूजनीय होती है। आध्यात्मिक जीवन दृष्टि के साथ भौतिक कुशलतायें विकसित नहीं होती, तब तक युद्ध के नरक में झुलसता रहेगा।

मातृत्व से पूर्ण होती है नारी, सौंदर्य से नहीं

सहरसा | प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन मातृत्व विरले मन में होता है। मां बनना एक जैविक घटना है, जबकि मातृत्व का भाव दैवीय अनुभूति है। ये बाते अरुण कुमार जायसवाल ने रविवार को स्थानीय गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र को संबोधित करते हुए कही। नारी के विविध रूपों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि स्त्री की संपूर्णता उसकी संतान में मानी गई है। संतान के जन्म के साथ ही एक मां का भी जन्म होता है। इससे पहले वह पुत्री, बहन या पत्नी होती है, लेकिन संतान के जन्म के बाद वह मां के रूप में एक नई पहचान प्राप्त करती है।उन्होंने कहा कि स्त्री अपने सौंदर्य के कारण नहीं बल्कि अपने मातृत्व के कारण पूजनीय होती है।

मातृत्व के कारण स्त्री होती है पूजनीय : डा. अरुण

गायत्री शक्तिपीठ मे संबोधित करते ट्रस्टी डा. अरूण कुमार जायसवाल ● जागरण

संवाद सूत्र, जागरण ● सहरसा: रविवार को शहर के गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र आयोजित किया गया। सत्र को संबोधित करते हुए शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने नारी के कितने रूप के संबंध मे विस्तार से बताते हुए कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है लेकिन मातृत्व जो है वह विरले के मन में होता है। मां बनना तो एक जैविक घटना है, पर मातृत्व का होना एक दैवी घटना है। प्रेम और मातृत्व में बहुत फर्क है। प्रेम पत्नी पति के प्रति करती है। पश्चिम का एक दार्शनिक है, निन्जिसकी, उसने कहा कि नारी का प्रेम कब पूर्ण होता है जब उसको अपने पति में अपनी संतान दिखने लगती है। वह पति का पुत्रवत ख्याल रखती है। ये बात सबसे पहले भारत में कही गई। फिर इस बात को विदेशों में भी लोगों ने कही। प्रेम जब पूर्ण होता है तो वह पत्नी की जगह माता बन जाती है। पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया।

गायत्री शक्तिपीठ में नारी तेरे कितने रूप विषय पर परिचर्चा आयोजित

अंग भारत। सहरसा

सहरसा स्थित गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र के अंतर्गत नारी तेरे कितने रूप विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने नारी के विविध रूपों और उसकी आध्यात्मिक शक्ति पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रेम और मातृत्व में बड़ा अंतर है। माँ बनना एक जैविक प्रक्रिया है, जबकि मातृत्व एक दैवी गुण है। स्त्री अपने प्रेम को सहज रूप से व्यक्त कर सकती है और उसमें प्रतीक्षा का अद्भुत धैर्य होता है, जो पुरुषों में कम देखने को मिलता है। डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि भारतीय परंपरा में विधवा स्त्री तपस्विनी और साध्वी का स्वरूप ग्रहण कर मर्यादित जीवन जीती है, जो अन्य देशों में कम देखने को मिलता है। उन्होंने कहा कि स्त्री में तपस्विनी और साध्वी दोनों बनने की सामर्थ्य होती है। सत्र में आध्यात्मिक जीवन दृष्टि और मानवीय मूल्यों पर भी चर्चा की गई तथा उपस्थित लोगों से जीवन में सद्बुद्धि और आध्यात्मिकता को अपनाने का आह्वान किया गया।

मां बनना तो एक जैविक घटना है, पर मातृत्व का होना दैवीय घटना : डॉ अरुण

गायत्री शक्तिपीठ में व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन

प्रतिनिधि, सहरसा

सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण जायसवाल.

गायत्री शक्तिपीठ में रविवार को व्यक्तित्व परिष्कार सत्र का आयोजन किया गया. सत्र को संबोधित करते डॉ अरुण कुमार जायसवाल ने नारी के कितने रूप के संबंध में चर्चा की. उन्होंने कहा कि प्रेम किसी के मन में हो सकता है, लेकिन मातृत्व विरले के मन में होता है. मां बनना तो एक जैविक घटना है पर मातृत्व का होना एक दैवीय घटना है. प्रेम एवं मातृत्व में बहुत फर्क है. प्रेम पत्नी पति के प्रति करती है. उन्होंने कहा कि नारी का प्रेम जब उसको अपने पति में अपनी संतान दिखने लगती है तो वह पति का पुत्रवत ख्याल रखती है. प्रेम जब पूर्ण होता है तो वह पत्नी की जगह माता बन जाती है. पत्नी का पति के प्रति जब संतान भाव आता है तब समझिए कि पत्नी का प्रेम पति के प्रति पूर्ण हो गया. संतानवत प्रेम बहुत विरल है बहुत मुश्किल है. जब नारी के अंदर मातृभाव आ जाता है तो उसे अपनी पति की गलती दिखाई नहीं देती. सचमुच संतान से नारी पूर्ण होती है. स्त्री अपने सौंदर्य के कारण पूजनीय नहीं हो सकती है. सौन्दर्य के कारण वह प्रशंसनीय हो सकती है. लेकिन वह अपने मातृत्व के कारण पूजनीय होती है. स्त्री पारस की तरह होती है जिस रिश्ते को छूती है उसे प्रेम से भर देती है.

स्त्री का अस्तित्व में होना, उत्सव का विषय है. प्रेम के लिए स्त्री के अंदर प्रतीक्षा का धैर्य बहुत होता है. जितनी प्रतीक्षा स्त्री कर सकती है उतनी प्रतीक्षा कोई नहीं कर सकता. ये स्त्रियां ही कर सकती है, पुरुष नहीं कर सकता. अपने यहां विधवा होकर जो साध्वी का जीवन जीती है, वैसा किसी अन्य देश में परंपरा है ही नहीं. विधवा स्त्री तपस्विनी एवं साध्वी का स्वरूप ग्रहण करती है. स्त्री में सामर्थ्य है वह तपस्विनी एवं साध्वी दोनों बनकर रह सकती है. पुरुष में सामर्थ्य ही नहीं है कि वह यह काम कर सके.

गायत्री शक्तिपीठ में वासंतिक नवरात्र के दौरान देव कन्याओं ने कराया विधिवत पूजन

जगन्नमाता की गोद में पुत्रवत रहकर नौ दिन तक साधना पूरा करें : डॉ अरुण

नवबिहार दूत संवाददाता

सहरसा: गायत्री शक्तिपीठ में वासंतिक नवरात्र के प्रथम दिन गुरुवार को देव कन्याओं द्वारा आदि शक्ति मां शैलपुत्री की पूजन विधि-विधान पूर्वक किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने बासंती नवरात्र के संबंध में कहा-वर्ष में चार रात्रि होती है।दो गुप्त नवरात्रि और दो प्रत्यक्ष नवरात्रि।प्रत्यक्ष नवरात्रि में आज वासंतिक नवरात्रि है।प्रत्यक्ष नवरात्रि में पहले शिवरात्रि हुआ जिसमें प्रकृति और पुरूष का मिलन हुआ।इसके बाद होली दारुण रात्रि और आज वासंतिक नवरात्रि चरम पर है। उसी वसंती उल्लास को हम हर्ष और उल्लास से मनाते हैं और वही वसंत का चरम रामनवमी में होगा। नया संवत्सर शुरू हुआ और नये वर्ष की सुभकामनाएं भी है।

पूजन करवाती देव कन्याएं...

नवरात्र में उनका वंदन, अर्चन करने का चलन है, जिनके कोख से सारा संसार पल रहा है, वह माता हमें कभी नही भूलती, जिसने हमें हवा, सूरज, चन्द्रमा सभी उपहार दिए हैं।चारो ओर हरियाली फल-फूल, अपनी खिलखिलाती हुई फूलों से भीनी भीनी खुशबू को बिखेरते हुए पौधे, सचमुच अद्भुत है। नक्षत्रों की चादर ओढ़ाकर हमें सुलाती है और सूरज के साथ हमें जगाती है।यह प्रकृति का विस्तार भारतीय संस्कृति में वसंत को भगवान के रूप में पूजा जाता है। यह भारतीय संस्कृति में हीं है और किसी भी संस्कृति में नहीं है।मां छोटे बच्चे को बताती है, यह पिता है, यह चाचा-चाची है।यह दादा-दादी, भाई-बहन, फुआ आदि है, इसलिए मां प्रथम गुरु होती है। उन्होंने कहा-जिस प्रकार इन्सान मां के पेट में रहकर जीवन निर्माण करता है उसी प्रकार नौ दिनों तक जगन्नमाता के गोद में रहकर अपनी पहले उसे की साधना पूरा करेंगे। इस अवसर पर परिजन ने 24, 0000 गायत्री मंत्र जप का संकल्प लिए। लगभग 1500 से ज्यादा परिजन उपस्थित थे। मां शैलपुत्री का पूजन महिला पुरोहित मनीषा, भारती, लक्ष्मी करवाई तथा पूजन के मुख्य यजमान चेतन आनंद सपत्नी थे। इसके साथ सभी गायत्री परिजन उपस्थित थे।

वासंतिक नवरात्र का शुभारंभ, देव कन्याओं ने किया पूजन

सहरसा/संवाददाता। गायत्री शक्तिपीठ में वासंतिक नवरात्र के प्रथम दिन गुरुवार को देव कन्याओं द्वारा मां शैलपुत्री का विधि-विधान से पूजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा कि नवरात्र साधना का पर्व है और नौ दिनों तक जगन्माता की गोद में रहकर साधना पूर्ण करनी चाहिए। पूजन कार्य महिला पुरोहित मनीषा, भारती एवं लक्ष्मी ने संपन्न कराया, जबकि मुख्य यजमान चेतन आनंद सपत्नी रहे। कार्यक्रम में करीब 1500 श्रद्धालु शामिल हुए, जिन्होंने 24 लाख गायत्री मंत्र जप का संकल्प लिया।

शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में चैती नवरात्र को लेकर लोगों में उत्साह, विधि-विधान के साथ किया कलश स्थापित

मां शैलपुत्री की भक्तों ने की आराधना

चैती नवरात्र

09 दिन तक देवी के विभिन्न स्वरूपों की श्रद्धालु करेंगे पूजा-अर्चना

- हिमालय के यहां जन्म लेने के कारण देवी शैलपुत्री नाम पड़ा
- घरों एवं मंदिरों में दुर्गा पाठ के मंत्र होते रहे गूंजायमान

गुरुवार को चैती नवरात्र के पहले दिन गायत्री शक्तिपीठ में पूजन दौरान उपस्थित कन्याएं। • हिन्दुस्तान

सहरसा, नगर संवाददाता। जिले में गुरुवार को कलश स्थापना के साथ चैत्र नवरात्रि शुरू हो गया। चैती नवरात्र के पहले दिन विधि विधान के साथ मां दुर्गा के प्रथम रूप मां शैलपुत्री देवी की पूजा अर्चना की गयी। इससे पहले विधि विधान से घरों और मंदिरों में कलश स्थापना की गई।

सुबह से ही श्रद्धालु नवरात्र को लेकर अराधु तैयारी में जुट गए। शारदीय नवरात्र की तरह ही अब चैती नवरात्र भी व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है। चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से चैत्र नवरात्रि शुरू हो जाती है। एक साल में कुल 4 नवरात्रि आती हैं जिसमें चैत्र और शारदीय नवरात्रि काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। मां के पहले स्वरूप शैलपुत्री की पूजा-अर्चना कर श्रद्धालुओं ने सुख-समृद्धि की कामना की। राजा हिमालय के यहां जन्म लेने के कारण मां दुर्गा के इस रूप का नाम शैलपुत्री पड़ा। मां शैलपुत्री को अखंड सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है। श्रद्धालुओं ने दुर्गा सप्तशती का पाठ कर मस्तक पर अर्ध चंद्र धारण करने वाली वृष पर आरूढ़ होने वाली शूल धारिणी, यशस्विनी शैलपुत्री दुर्गा की वंदना कर परिवार व समाज के सुख समृद्धि की कामना किया। शैलपुत्री के पूजन से संतान वृद्धि, धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। शहर से लेकर गांवों तक चैत्र नवरात्र को लेकर भक्तों में काफी उत्साह देखा जा रहा है। जगह-जगह मेला आयोजित करने की तैयारी चल रही है। स्थापना करने के साथ ही लगातार अलग-अलग दिनों में मां दुर्गा के ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कुष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी व मां सिद्धिदात्री की पूजा-अर्चना की जाएगी। चैती नवरात्र के दौरान ही चैती छठ, रामनवमी का पर्व मनाया जाएगा।

पर्व को लेकर बाजार में खासी चहल-पहल बढ़ गई है। लोगों में काफी उत्साह देखा जा रहा है। आस्था, साधना और सूर्य उपासना का महापर्व चैती छठ इस वर्ष 22 मार्च से शुरू होगा। चार दिनों तक चलने वाले इस पवित्र पर्व की शुरुआत नहाय-खाय के साथ होगी। चैती छठ का पर्व चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि से शुरू होता है और इसका समापन सप्तमी तिथि को होता है।

गायत्री शक्तिपीठ में बासंती नवरात्र के प्रथम दिन आदि शक्ति मां शैलपुत्री की पूजन विधि-विधान पूर्वक किया गया।इस अवसर पर डाक्टर अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-वर्ष में चार रात्रि होती है। दो गुप्त नवरात्रि और दो प्रत्यक्ष नवरात्रि।प्रत्यक्ष नवरात्रि में आज बासंती नवरात्रि है। आज से नया संवत्सर शुरू हुआ और नये वर्ष की शुभकामनाएं भी है। नवरात्र मेंउनका वंदन, अर्चन करने का चलन है,जिनके कोख से सारा संसार पल रहा है, वह माता हमें कभी नही भूलती,जिसने हमें हवा, सूरज, चन्द्रमा सभी उपहार दिए हैं। चारो ओर हरियाली फल-फूल, अपनी खिलखिलाती हुई फूलों से भीनी भीनी खुशबू को बिखेरते हुए पौधे, सचमुच अद्भुत है। परिजन ने 24,0000 गायत्री मंत्र जप का संकल्प लिए। 1500 से ज्यादा परिजन उपस्थित थे। मां शैलपुत्री का पूजन मनीषा, भारती, लक्ष्मी करवाई तथा पूजन के मुख्य यजमान चेतन आनंद सपत्नी थे।

गायत्री शक्तिपीठ में शैलपुत्री का हुआ पूजन

पूजन कराती देवकन्याएं • जागरण

संवाद सूत्र, जागरण, सहरसा: शहर के गायत्री शक्तिपीठ में बासंती नवरात्र के प्रथम दिन आदि शक्ति मां शैलपुत्री की पूजन विधि-विधान पूर्वक किया गया। इस अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ के ट्रस्टी डा. अरुण कुमार जायसवाल ने कहा-वर्ष में चार रात्रि होती है। दो गुप्त नवरात्रि और दो प्रत्यक्ष नवरात्रि। प्रत्यक्ष नवरात्रि में आज बासंती नवरात्रि है। प्रत्यक्ष नवरात्रि में पहले शिवरात्रि हुआ, जिसमें प्रकृति और पुरूष का मिलन हुआ। उसके बाद होली दारुण रात्रि और आज बासंती नवरात्रि चरम पर है। उसी बासंती उल्लास को हम हर्ष और उल्लास से मनाते हैं और वही बासंती का चरम राम नवमी में होगा।

नवरात्र में उनका वंदन, अर्चन करने का चलन है, जिनके कोख से सारा संसार पल रहा है,वह माता हमें कभी नही भूलती, जिसने हमें हवा, सूरज,चन्द्रमा सभी उपहार दिए हैं। नक्षत्रों की चादर ओढ़ाकर हमें सुलाती है और सूरज के साथ हमें जगाती है। यह प्रकृति का विस्तार भारतीय संस्कृति में बसंत को भगवान के रूप में पूजा जाता है। यह भारतीय संस्कृति में हीं है और किसी भी संस्कृति में नहीं है। मां छोटे बच्चे को बताती है, यह पिता है, यह चाचा-चाची है, यह दादा-दादी, भाई-बहन, फुआ आदि है, इसलिए मां प्रथम गुरु होती है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार इंसान मां के पेट में रहकर जीवन निर्माण करता है । उसी प्रकार नौ दिनों तक जगन्माता के गोद में रहकर अपनी साधना पूरा करेंगे।

गायत्री शक्तिपीठ में नवरात्रि के प्रथम दिन मां शैलपुत्री की हुई पूजा-अर्चना

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में बासंती नवरात्र के प्रथम दिन, गुरुवार को आदि शक्ति मां शैलपुत्री का पूजन विधि-विधानपूर्वक किया गया. इस अवसर पर डॉ.अरुण कुमार जायसवाल ने बासंती नवरात्र के संबंध में कहा कि वर्ष में चार नवरात्र होते हैं.दो गुप्त नवरात्र और दो प्रत्यक्ष नवरात्र. प्रत्यक्ष नवरात्र में वर्तमान में बासंती नवरात्र चल रहा है.उन्होंने बताया कि प्रत्यक्ष नवरात्र से पूर्व शिवरात्रि आती है, जिसमें प्रकृति और पुरुष का मिलन होता है. इसके बाद होली, जिसे दारुण रात्रि कहा जाता है, और फिर बासंती नवरात्र अपने चरम पर पहुंचता है. बासंती उत्सव का समापन राम नवमी पर होता है, जिसे अत्यंत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है.डॉ. जायसवाल ने कहा कि नए संवत्सर का आरंभ हो चुका है और यह नववर्ष की शुभकामनाओं का भी समय है. नवरात्र में मां का वंदन और अर्चन करने की परंपरा है, जिनकी कोख से समस्त संसार का पालन-पोषण होता है. उन्होंने कहा कि माता हमें कभी नहीं भूलती वही हमें हवा, सूर्य, चंद्रमा जैसे अनमोल उपहार देती है. चारों ओर फैली हरियाली, फल-फूल और सुगंधित वातावरण प्रकृति की अद्भुत छटा को दर्शाते हैं. प्रकृति हमें नक्षत्रों की चादर ओढ़ाकर सुलाती है और सूरज के साथ जगाती है. भारतीय संस्कृति में बसंत को भगवान के रूप में पूजने की परंपरा है, जो अन्य संस्कृतियों में विरले ही देखने को मिलती है.उन्होंने यह भी कहा कि मां ही बच्चे की प्रथम गुरु होती है, जो उसे परिवार और समाज से परिचित कराती है. जिस प्रकार मनुष्य नौ माह तक मां के गर्भ में रहकर जीवन का निर्माण करता है, उसी प्रकार नवरात्र के नौ दिनों में भक्त मां जगदंबा की शरण में रहकर अपनी साधना पूर्ण करते हैं. इस अवसर पर परिजनों ने 2 लाख 40 हजार गायत्री मंत्र जप का संकल्प लिया. कार्यक्रम में लगभग 1500 से अधिक परिजन उपस्थित थे.

सृष्टि यज्ञमय है व यज्ञ से एक-दूसरे का होता है पोषण

सहरसा. गायत्री शक्तिपीठ में बासंती नवरात्र के नवमी के दिन शुक्रवार को आदिशक्ति मां सिद्धिदात्री का पूजन विधि विधान से किया गया. पूजन के बाद साधक ने 24 हजार गायत्री मंत्र जप के लघु संकल्प अनुष्ठान यज्ञ हवन करते संपन्न किया. साथ ही अमृतासन प्रसाद ग्रहण करते व्रत का समापन किया. उन्होंने कहा पहले दिन कलश की स्थापन की गयी. 33 कोटि देवी देवताओं का आह्वान करते कलश की स्थापना की गयी. विगत नौ दिनों से नवदुर्गा के सभी रूपों का ध्यान एवं पूजन विधि-विधान से किया गया. भारतीय संस्कृति में परमेश्वर को मां के रूप में पूजने का विधान है. जिनकी जैसी श्रद्धा भावना, विश्वास होती है, उसी के अनुरूप लाभ पाते हैं. इस मौके पर नवरात्रि अनुष्ठान के पूर्णाहुति के रूप में पूरे विश्व के शांति के लिए गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से विशेष आहुति दी गयी. गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है यह श्रृष्टि यज्ञमय है एवं यज्ञ से एक दूसरे का पोषण होता है. अग्नि सभी देवताओं का मुख है. यहां कई राज्यों के लोग यज्ञ करने आते हैं. यह शक्ति का एवं जागरण का केंद्र है. यहां के कण-कण में जनशक्ति का वास है. व्यक्तित्व परिष्कार के माध्यम से जीवन कैसे सफल हो, प्रसन्नता कैसे प्राप्त की जाये यह माता की साधना से सब कुछ हासिल किया जा सकता है. पूर्णाहुति के क्रम में भगवान श्रीराम एवं परम भक्त हनुमान की विशेष चर्चा की एवं माता सीता के संबंध में कहा कि सीता आदर्श की प्रतिमान है. उनका चारित्रिक शौर्य दृष्टान्त प्रस्तुता है कि लोभ, मोह एवं प्रत्याशा से परे स्त्री सदा सबला होती है.

6 दैनिक जागरण भागलपुर 28 मार्च, 2026

सहरसा जागरण

नवरात्रि अनुष्ठान में विश्व शांति के लिए दी गई आहुति

नवम दिन शक्तिपीठ में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने किया हवन-यज्ञ झपड़ा टोला में मां दुर्गा की पूजा के लिए उमड़ी भीड़

• आदिशक्ति मां सिद्धिदात्री का पूजन विधिविधान से की गई • 24,000 गायत्री मंत्र जप के लघु संकल्प अनुष्ठान किया गया

चैत्र नवरात्र पर उत्साह, हवन-यज्ञ और पूजा-अर्चना में उमड़ी भीड़

दुर्गा माता के दर्शन को सुबह से ही जुटने लगी थी भीड़

शीतली प्राणायाम

परिचय :-

शीतली प्राणायाम (Cooling Breath) एक योगिक श्वास तकनीक है जो जीभ को नली (tube) बनाकर सांस लेने से शरीर और नर्वस सिस्टम को तुरंत ठंडक प्रदान करती है। यह गर्मियों में शरीर के तापमान, पित्त दोष, उच्च रक्तचाप (BP), और तनाव को कम करने में सहायक है। इसे 5-10 बार दोहराना फायदेमंद है।

शीतली प्राणायाम करने की विधि :-

आसन : सुखासन या पद्मासन में कमर सीधी करके बैठें और आंखें बंद करें।

जीभ की मुद्रा : जीभ को बाहर निकालें और उसे किनारों से मोड़कर ट्यूब (नली) का आकार दें।

श्वास लेना (पूरक) : इस ट्यूब के माध्यम से गहरी और धीमी सांस अंदर लें, जिससे जीभ पर ठंडक महसूस हो।

सांस रोकना (कुंभक) : जीभ को अंदर करें, मुंह बंद करें और सांस को कुछ देर रोकें।

सांस छोड़ना (रेचक) : अब धीरे-धीरे दोनों नासिका छिद्रों (नाक) से सांस बाहर निकालें।

पुनरावृत्ति : इसे 5-10 बार दोहराएं।

शीतली प्राणायाम के प्रमुख लाभ :-

शरीर को शीतलता : भीषण गर्मी में शरीर और मन को शांत करता है।

उच्च रक्तचाप : यह उच्च रक्तचाप (High BP) को कम करने में बहुत प्रभावी है।

पाचन और एसिडिटी : पेट की गर्मी, एसिडिटी (Acidity) और सीने में जलन को ठीक करता है।

मानसिक शांति : गुस्सा, तनाव और अनिद्रा की समस्या को कम करता है।

सावधानियां :-

— निम्न रक्तचाप (Low BP), अस्थमा या सर्दी-जुकाम होने पर इसे न करें।

— ठंडे मौसम में इसका अभ्यास न करें।

— यदि जीभ को मोड़ने में परेशानी हो, तो दांतों को बंद करके होठों को खोलकर भी सांस ली जा सकती है।

माह मार्च में इन गणमान्य अतिथियों ने पाँच दिवसीय प्राकृतिक चिकित्सा एवं रूद्राभिषेक, यज्ञ एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा (गान, ज्ञान, ध्यान) में भाग लिया -

- श्री राकेश कुमार वर्मा (सेवानिवृत रॉ के डायरेक्टर) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- डॉ० परिणीति (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- डॉ० मानवेंद्र (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- डॉ० नागेश (प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय) - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र में भाग लिया।
- श्रीमती रश्मि गुप्ता (उड़ई) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- सुश्री उदिशा वेंकट (उड़ई) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- अथर्व वेंकट (उड़ई) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, एवं साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा में भाग लिया।
- श्री दिव्यांग पाण्डेय (दिल्ली) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं नवरात्रि पूजन में भाग लिया।
- श्री शिवांग पाण्डेय (दिल्ली) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं नवरात्रि पूजन में भाग लिया।
- श्री सूर्यपति त्रिवेदी (बंगाल) - प्राकृतिक चिकित्सा, यज्ञ, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं नवरात्रि पूजन में भाग लिया।
- श्री योगीश भट्ट (आयरलैंड) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं नवरात्रि पूजन में भाग लिया।
- श्रीमती शालिनी जी (आयरलैंड) - प्राकृतिक चिकित्सा, रुद्राभिषेक, यज्ञ, साप्ताहिक व्यक्तित्व परिष्कार की कक्षा एवं नवरात्रि पूजन में भाग लिया।
- श्री संतोष जी सपरिवार (एडीजे, सहरसा) - रुद्राभिषेक पूजन में भाग लिया।

आगामी कार्यक्रम

05 अप्रैल - विशेष भोजन

15 अप्रैल - प्रदोष व्रत

19 अप्रैल - परशुराम जयंती

19 अप्रैल - ज्ञानदीक्षा एवं दीक्षांत समारोह

29 अप्रैल - प्रदोष व्रत

अंतिम रविवार - 24 घरों में गायत्री यज्ञ

प्रत्येक रविवार - व्यक्तित्व परिष्कार सत्र

कालिख का घर

जगत कालिख का घर है प्यारे, इससे बचना मुश्किल बहुत है
जीवन का संगीत यहां खो जाता, इस राह चलना कठिन बहुत है ।
जिस हेतु करोगे, वही देगा धोखा, इसे संतुष्ट करना दुष्कर बहुत है
रिश्ते इसके रिसते हैं इतना, उन्हें प्रसन्न करने में कष्ट बहुत है ।।

जगत् को देते जाओ, देते जाओ पर इसको डकार भी नहीं आती
जिस दिन हाथ खींच लोगे इससे, उस दिन यह तरेरेगा आँखें ।
एक मूढ़ को चले समझाने, यह सब करना सरल नहीं है
बालू से तेल निकल सकता है पर जगत की प्रसन्नता नहीं आसान है ।।

ऐसे जगत से दूर रहो तुम, खुद ही लड़ने-मरने दो इसको
चूहे बिल्ली का यह खेल तमाशा, इससे फिर बोलो कैसी आशा ।
पथिक हो प्यारे इस जग के तुम, पथ में रुककर भले आनंद मना लो
फिर चल दो अपने गंतव्य की ओर, उस प्रियतम को मनाना आसान बहुत है ।।

जगत यह शोर मचाता समुद्र है, तुम उस समुद्र से निकलकर झील बन जाओ ।
उस झील के प्रशांत जल में, अपने अस्तित्व का बोध पा जाओ ।
इसी बोध हेतु इस जीवन की यात्रा, फिर कहाँ तुम भटक रहे हो ।
अरे यह अटकन-भटकन लगी रहेगी, कारण यहाँ संशय बुहत है ।।

जगत को मन से दे दो विदाई, उस ईश्वर से तुम करो सगाई ।
तन मन की कालिख जब हटेगी, उस प्रियतम से फिर कब होगी जुदाई ।
वही आनंद का सागर प्यारे, पर उसे छोड़ चयन करते जगत का ।
विषफल चुनो या अमृतफल तुम, चयन का मिलता यहाँ फल बहुत है ।।

– डॉ. लीना सिन्हा

परिचय

सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्ति भूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तुते।।

गायत्री शक्तिपीठ, सहरसा

अखिल विश्व गायत्री परिवार का दर्शन है- मनुष्य में देवत्व का जागरण और धरती पर स्वर्ग का अवतरण। यह पूरे युग को बदलने के अपने सपने को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में आध्यात्मिक और सामाजिक गतिविधियों को अंजाम देता है। इन गतिविधियों का मुख्य फोकस विचार परिवर्तन आंदोलन है, जो सभी प्राणियों में धार्मिक सोच विकसित कर रहा है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के गायत्री शक्तिपीठ सहरसा में सहरसा और आसपास के क्षेत्रों में स्थित गायत्री परिवार के सदस्य शामिल हैं। गायत्री शक्तिपीठ ट्रस्ट, सहरसा स्थानीय निकाय है जो सहरसा और उसके आसपास कई आध्यात्मिक और सामाजिक क्षेत्रों से संबंधित अनेकों उल्लेखनीय गतिविधियों, जैसे- यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण, स्वावलंबन प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण, कम्प्यूटर शिक्षण, ह्यूमन लायब्रेरी, भारतीय संस्कृति प्रसार, स्वास्थ्य संवर्धन, जीवन प्रबंधन, समय प्रबंधन आदि वर्कशॉप का आयोजन करता है। गायत्री शक्तिपीठ सहरसा के सदस्य व्यवसायी, आईटी पेशेवर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, शिक्षक, डॉक्टर आदि हैं, जो सभी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्धारित आध्यात्मिक सिद्धांतों के प्रति उनकी भक्ति और प्रेम से बंधे हैं, जिन्हें परमपूज्य गुरुदेव के रूप में स्मरण किया जाता है।

स्वेच्छा सहयोग यानि अपना अनुदान इस Account No. पर भेज सकते हैं

Account No. – 11024100553 IFSC code – SBIN0003602

पत्राचार	:	**गायत्री शक्तिपीठ, प्रतापनगर, सहरसा, बिहार (852201)**
संपर्क सूत्र	:	**06478-228787, 9470454241**
Email	:	**gspsaharsa@gmail.com**
Website	:	**https://gsps.co.in/**
Social Connect	:	**https://www.youtube.com/@GAYATRISHAKTIPEETHSAHARSA** **https://www.facebook.com/gayatrishaktipeeth.saharsa.39** **https://www.instagram.com/gsp_saharsa/?hl=en** **https://twitter.com/gsp_saharsa?lang=en** **https://www.linkedin.com/in/gayatri-shaktipeeth-saharsa-21a5671aa/**